PRGI. No.: MHMUL/25/A2419

प्यूपिल्स टाइम्स

PUPILS TIMES

Volume : 1 ▸ Issue : 30 ▸ Mumbai ▸ Friday, 28 August to 3 September 2026 ▸ Weekly Pages : 8 ▸ Price : 3 Rs.

विश्व के साथ देश का संबंध हमेशा राष्ट्रहित सर्वोपरी के हितों के अनुरूप होना चाहिए : राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु

नई दिल्ली: राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने कहा है कि विश्व के साथ देश का संबंध हमेशा राष्ट्रहित सर्वोपरी के हितों के अनुरूप होना चाहिए। भारतीय विदेश सेवा के प्रशिक्षुओं ने राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु से मुलाकात की। राष्ट्रपति ने कहा कि वे यह सुनिश्चित करें कि भारतीय दूतावास आवश्यकता के समय नागरिकों के लिए हमेशा उपलब्ध रहें। राष्ट्रपति ने कहा कि भारतीय विदेश सेवा के अधिकारी न केवल सरकार का प्रतिनिधित्व करते हैं, बल्कि 140 करोड़ देशवासियों की आशाओं और आकांक्षाओं का भी प्रतिनिधित्व करते हैं।

विवेकानंद केंद्र के अध्यक्ष ए. बालकृष्णनजी का निधन

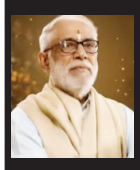

नई दिल्ली: विवेकानन्द केन्द्र के अध्यक्ष श्री ए. बालकृष्णन का निधन गुरुवार सुबह पांच बजे निधन हो गया। वह 88 वर्ष की उम्र में उन्होंने अंतिम सांस ली। श्री बालकृष्ण के निधन पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने गहरा दुख व्यक्त किया है। विवेकानन्द रॉक मेमोरियल एवं विवेकानन्द केन्द्र के अध्यक्ष बालकृष्णनजी जीवनव्रती कार्यकर्ता थे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उनके साथ बिताए पलों को याद करते हुए शोक संवेदना व्यक्त की है। प्रधानमंत्री मोदी ने शोक व्यक्त करते हुए कहा कि विवेकानंद केंद्र के अखिल भारतीय अध्यक्ष रहे श्री ए. बालकृष्णन जी के निधन से गहरा दुख हुआ है। बालकृष्णन जी ने अपने जीवन के पांच दशक से अधिक का समय स्वामी विवेकानंद के आदर्शों और समाज की सेवा में समर्पित किया।

आकाशवाणी समाचार के पूर्व समाचार वाचक पंचदेव पांडे का निधन

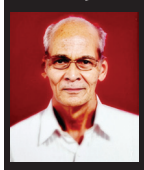

नई दिल्ली: आकाशवाणी के जाने-पहचाने न्यूज रीडर पंचदेव पांडेय का गुरुवार सुबह निधन हो गया। बलिया के मूल निवासी पंचदेव पांडेय ने गाजियाबाद के एक निजी अस्पताल में सुबह 8 बजे अंतिम सांस ली। पंचदेव पांडेय के निधन की खबर से आकाशवाणी से जुड़े लोगों और उनके परिचितों के बीच शोक की लहर है। वो गाजियाबाद के वसुंधरा में रहते थे। पंचदेव पांडेय ने वर्ष 1963 में आकाशवाणी के वाराणसी केंद्र से उद्घोषक के रूप में अपने रेडियो करियर की शुरूआत की थी। शुरूआती दौर में उन्होंने उद्घोषक के तौर पर अपनी जिम्मेदारी निभाई और बाद में समाचार वाचन के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनाई।

नेपाल बाढ़ में करीब 160 लोगों की मौत

133 भारतीय नागरिकों समेत 750 से अधिक लोग लापता

काठमांडू: नेपाल में आई विनाशकारी बाढ़ में मरने वालों की संख्या बढ़कर 359 हो गई है। हालात इतने खराब हैं कि करीब 1500 लोगों का कुछ पता नहीं चल पा रहा है और इनकी तलाश जारी है। पुलिस ने गुरुवार को बताया कि लापता लोगों में 288 भारतीय पर्यटक भी शामिल हैं। इस दौरान 800 से अधिक लोगों को बचा लिया गया है। यह हाल के वर्षों में नेपाल में आई सबसे भीषण आपदाओं में से एक है। अचानक आई बाढ़ ने नेपाल के तीन जिलों में भारी तबाही मचाई थी। पुलिस के अनुसार, भोटेकोशी नदी में आई अचानक बाढ़ के बाद 332 शव बरामद किए जा चुके हैं। वहीं, तिब्बत में तीन लोगों की मौत हुई और लोगों के लापता होन का आंकड़ा 558 तक पहुंच गया। नेपाल पर्यटन बोर्ड के अनुसार, लापता लोगों में 517 विदेशी और 127 नेपाली नागरिक शामिल हैं। इन लापता लोगों में से 60 से ज्यादा अमेरिका से हैं और बाकी 30 अन्य देशों से हैं। इनमें यूक्रेन और ब्रिटेन से लेकर दक्षिण अफ्रीका और जापान तक शामिल हैं। इसके अलावा नेपाल पुलिस के 28 जवान, नेपाल सेना के 44 जवान, आर्म्ड पुलिस फोर्स के 13 जवान, कस्टम्स ऑफिस के 15 कर्मचारी और इमिग्रेशन ऑफिस के चार कर्मचारी शामिल हैं। नेपाल पुलिस ने बताया कि मरने वालों में नेपाल के धाडिंग में 27, नुवाकोट में 12, रसुवा में दो, गोरखा में 20, नवलपरासी ईस्ट में 62, तनाहुन में 12, चितवन में 108 और नवलपरासी वेस्ट में 15 लोग शामिल हैं। तमिलनाडु के 21 लोगों को बचाया गया, विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रंधीर जैसवाल ने बताया कि लापता भारतीयों में जलविद्युत परियेखा में काम करने वाले लोग और पर्यटक शामिल हैं। तिब्बत में लगभग 200 भारतीयों ने भी भारत से सहायता मांगी है। 288 में वे 73 भारतीय नागरिक भी शामिल हैं, जो त्रिशूली-1 जलविद्युत परियोजना में काम कर रहे थे। गृह मंत्रालय समेत कई केंद्रीय मंत्रालय लगातार स्थिति की मॉनिटरिंग कर रहे हैं। बिहार के 6 जिलों में विशेष सतर्कता बरतने के निर्देश दिए गए हैं। वहीं, पीएम मोदी ने नेपाल के प्रधानमंत्री बालेन शाह से फोन पर बात कर हर संभव मदद का भरोसा दिया है। पीएम मोदी ने सोशल मीडिया पर कहा कि इस मुश्किल घड़ी में भारत के लोग नेपाल के अपने भाई-बहनों के साथ मजबूती से खड़े हैं। नेपाल बाढ़ पर महाराष्ट्र की सीएम देवेंद्र फडणवीस ने कहा, 'अभी तक महाराष्ट्र के कितने पर्यटक नेपाल में फंसे हैं, इसका आंकड़ा सामने नहीं आया है। हमारी संवेदनाएं सभी पर्यटकों के साथ हैं। राहत और पुनर्वास मंत्री गिरीश महाजन लगातार फंसे हुए लोगों के परिजनों के संपर्क में हैं। जो लोग वहां फंसे हैं, उन्हें वापस लाने के लिए हम प्रयास कर रहे हैं। कुछ लोग नेपाल से अलग-अलग रास्तों से वापस आना चाहते हैं, उन्हें भी हम मदद कर रहे हैं। महाराष्ट्र सरकार अलर्ट मोड पर है।' नेपाल सरकार ने भोटेकोशी नदी में संभावित बाढ़ के खतरे के बारे में खास नोटिस जारी किया है। नेपाल के विदेश मंत्रालय के जरिए चीन से मिली ताजा जानकारी के मुताबिक, सैटेलाइट इमेज और शुरूआती एनालिसिस के तहत, नदी रुक गई है और कल जिस जगह बाढ़ आई थी, वहां एक झील बन गई है। नोटिस में कहा गया है कि झील का पानी बढ़ रहा है और उसके फटने का खतरा है। इस स्थिति को देखते हुए, जब तक अगला नोटिस जारी नहीं होता, भोटेकोशी नदी के निचले किनारे वाले इलाके के निवासियों, यात्रियों, बचाव अभियान में लगे बचावकर्मियों और सभी संबंधित लोगों से अनुरोध है कि वो खास सावधानी बरतें और नदी के किनारों और जोखिम वाले इलाकों से दूर सुरक्षित जगहों पर रहें। **(शेष पेज 5 पर)**

पीएम मोदी ने 'खेलो इंडिया डायलॉग' में एथलीटों से किया संवाद

कहा-'मुझे देश के युवाओं की शक्ति पर भरोसा'

नई दिल्ली: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा है कि सरकार 21वीं सदी के भारत के लिए आधुनिक खेल व्यवस्था तैयार करने को पूरी तरह प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि खेल विश्वविद्यालयों से लेकर आधुनिक प्रशिक्षण केंद्रों तक, देशभर में ऐसा खेल तंत्र विकसित किया जा रहा है, जिसमें खिलाड़ियों की प्रतिभा को हर स्तर पर सहयोग मिले। वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से खेलो इंडिया संवाद को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि खेल केवल पदक जीतने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह विकसित भारत के निर्माण में देश की खेल प्रतिभा और युवाशक्ति को जोड़ने का अभियान है। उन्होंने कहा कि देश के हर जिले में विश्व के खेल मानचित्र पर अपनी पहचान बनाने की क्षमता है। प्रधानमंत्री ने कहा कि उन्होंने लाल किले की प्राचीर से 5 से 15 वर्ष की आयु के बच्चों में खेल प्रतिभा खोजने के लिए बड़े प्रतिभा खोज अभियान की घोषणा की थी। प्रधानमंत्री ने कहा कि कि केवल इस बात पर ध्यान नहीं देना चाहिए कि बच्चे की रुचि किस खेल में है, बल्कि यह भी पहचानना चाहिए कि वह किस खेल के लिए सबसे अधिक उपयुक्त है। उन्होंने इसके लिए सरकार की ओर से हर संभव सहयोग देने का आश्वासन दिया। प्रधानमंत्री ने प्रसन्नता व्यक्त की कि आज भारत में खेल एक बेहतर करियर और पेशे के रूप में उभर रहा है। मोदी ने कहा कि खेल केवल चैंपियन बनना ही नहीं सिखाता, बल्कि बेहतर प्रतियोगी बनना भी सिखाता है। उन्होंने कहा कि खेलो इंडिया संवाद केवल खेलों पर चर्चा का कार्यक्रम नहीं है, बल्कि संवाद का ऐसा मंच है, जहां हर विचार देश के खेल क्षेत्र को नई दिशा दे सकता है। प्रधानमंत्री ने कहा कि देश के युवाओं की शक्ति से निकले ये नए विचार विकसित भारत के संकल्प को पूरा करने की ताकत बनेंगे। इस अवसर पर युवा मामले और खेल मंत्री मनसुख मांडविया ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में खेल राष्ट्रीय प्राथमिकता और युवा सशक्तिकरण का महत्वपूर्ण माध्यम बन गया है। उन्होंने कहा कि भारत का खेल तंत्र अब केवल बुनियादी ढांचे और पदकों तक सीमित नहीं है। फिट इंडिया मूवमेंट और संडे ऑन साइकिल जैसी पहल लोगों को फिटनेस को दैनिक जीवन का हिस्सा बनाने के लिए प्रेरित कर रही हैं। मांडविया ने कहा कि राष्ट्रीय खेल प्रशासन अधिनियम खेलों में पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ा रहा है तथा सभी खिलाड़ियों को समान अवसर देने में मदद करेगा। **(शेष पेज 5 पर)**

भारत-अमेरिका ने हिंद महासागर क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने पर किया विचार-विमर्श

नई दिल्ली: विदेश सचिव विक्रम मिस्री ने अमेरिका की उप विदेश सचिव एलिसन हूकर के साथ भारत-अमेरिका इंडियन ओशन स्ट्रैटेजिक वेंचर पहल को आगे बढ़ाने के लिए उपयोगी बातचीत की। यह पहल दोनों देशों के नेताओं ने पिछले वर्ष शुरू की थी। दोनों पक्षों ने हिंद महासागर क्षेत्र में व्यावहारिक सहयोग और आपसी तालमेल के अवसरों पर चर्चा की। इस दौरान समुद्री सुरक्षा, रणनीतिक बुनियादी ढांचे और संपर्क सहित विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग की संभावनाओं पर विचार किया गया। यह चर्चा साझेदार देशों की प्राथमिकताओं को ध्यान में रखते हुए की गई।

सीएम सम्राट चौधरी का ऐलान

बिहार में खुलेगी महिला यूनिवर्सिटी

पटना: बिहार में महिला विश्वविद्यालय की स्थापना की जाएगी। इस खास यूनिवर्सिटी में स्टूडेंट्स से लेकर कुलपति तक सभी महिलाएं ही होंगी। महिला यूनिवर्सिटी में सिर्फ छात्राओं को एडमिशन मिलेगा। साथ ही सभी टीचर और अन्य स्टाफ में भी महिलाओं की ही नियुक्ति की जाएगी। रक्षाबंधन के मौके पर मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने यह घोषणा की। उन्होंने महिला रोजगार योजना के तहत 5 लाख महिलाओं के खाते में लगभग 600 करोड़ रुपये भी डीबीटी के माध्यम से ट्रांसफर किए। सीएम सम्राट चौधरी ने पटना स्थित बापू सभागार में 'समृद्ध महिला समृद्ध बिहार अभियान' का शुभारंभ किया। इस मौके पर उन्होंने यह भी ऐलान किया कि साल 2030 तक जीविका दीदियों के विकास पर सरकार लगभग 20 हजार करोड़ रुपये खर्च करेगी। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने महिला रोजगार योजना की पहली और दूसरी किस्त 5 लाख लाभार्थियों के खाते में ट्रांसफर भी की। इससे पहले सम्राट सरकार ने महिलाओं और बच्चियों पर केंद्रित तीन बड़ी योजनाओं का शुभारंभ किया था। सीएम सम्राट चौधरी ने स्टार्टअप चैलेंज, बालिका पीएचडी फेलोशिप और स्कूल-कॉलेज के पास पुलिस दीदी की तैनाती का आगाज किया। सीएम ने पुलिस दीदी 4700 दोपहिया वाहनों को हरी झंडी दिखाई। **(शेष पेज 5 पर)**

संपादकीय

तार-तार होती भाषा की मयार्दा

भारत का सार्वजनिक जीवन इस समय एक गहरे अंतर्विरोध से गुजर रहा है। एक तरफ देश सुशासन, नीतिगत सुधारों और विकास की नई प्राथमिकताओं के साथ आगे बढ़ रहा है, तो दूसरी तरफ राजनीतिक संवाद के आक्रामक और असंसदीय होने की प्रवृत्ति तेजी से बढ़ रही है। लोकतंत्र में विरोध करना संवैधानिक अधिकार है, लेकिन जब विरोध की भाषा से शिष्टता गायब हो जाती है, तो नीतिगत बहस का स्थान केवल व्यक्तिगत कटुता ले लेती है। यह कसौटी सत्तापक्ष और विपक्ष दोनों पर समान रूप से लागू होती है। राजनीतिक भाषा केवल विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं है। वह समाज की सत्ता-संस्कृति और नागरिक चेतना का निर्माण करती है। राजनीतिक संवाद यह तय करता है कि समाज में असहमति का स्वरूप कैसा होगा। यदि अपमान और असत्यापित आरोप ही विमर्श का मुख्य जरिया बन जाएं, तो तथ्यपरक और गंभीर भाषा किनारे हो जाती है। जब शीर्ष नेतृत्व की भाषा संयमित होती है, तो समाज में विमर्श का स्तर परिपक्व बनता है। इसके विपरीत जब भाषा का स्तर गिरता है, तो उसका सीधा असर सामाजिक सद्भाव पर पड़ता है। आज सार्वजनिक जीवन का संकट यह है कि राजनीति में नीतिगत विरोध और व्यक्तिगत हमले के बीच का अंतर मिटता जा रहा है। असहमति लोकतंत्र की शक्ति है, लेकिन जनादेश को नकारना लोकतांत्रिक विवेक को कमजोर करता है। विरोधी दल सत्ता के वैकल्पिक दावेदार हैं, व्यवस्था के शत्रु नहीं। राजनीतिक कटुता का सबसे गंभीर परिणाम तब होता है, जब राजनीतिक विरोधी को विरोधी मानने के बजाय शत्रु मान लिया जाता है। लोकतंत्र में सत्ता और विपक्ष, दोनों को एक-दूसरे की राजनीतिक वैधता स्वीकार करनी होती है। जब यह स्वीकार्यता कमजोर पड़ती है, तब हर असहमति देशहित और देशविरोध के द्वंद्व में बदलने लगती है। फिर संवाद का उद्देश्य दूसरे को समझना नहीं, उसे नैतिक रूप से खारिज करना बन जाता है। ऐसी राजनीति में समझौता कमजोरी दिखाई देता है और मतभेद को स्थान देना राजनीतिक अपराध जैसा बना दिया जाता है। जब राष्ट्रीय स्तर का कोई नेता सार्वजनिक मंचों से अमर्यादित शब्दों का प्रयोग करता है, तो पार्टी के कार्यकर्ता और समर्थक उसी भाषा को अपना मानक मान लेते हैं। इस प्रकार मंचों से शुरू हुआ भाषाई प्रदूषण धीरे-धीरे समूचे सामाजिक परिवेश को प्रभावित करता है। नेताओं को यह याद रखना होगा कि वे समाज के सार्वजनिक आचरण का पैमाना भी तय करते हैं। सरकार की नीतियों पर कठोर प्रश्न लोकतंत्र की आवश्यकता है, लेकिन प्रश्न को बिना साक्ष्य आरोप बना देना उचित नहीं। लोकतांत्रिक मयार्दा की रक्षा केवल नेताओं के भरोसे नहीं छोड़ी जा सकती। नागरिक किस प्रकार की राजनीतिक भाषा को महत्व देते हैं, इससे भी सार्वजनिक जीवन की दिशा तय होती है। जनता का विवेक ही असभ्य भाषा पर सबसे बड़ा लोकतांत्रिक अंकुश है। राजनीतिक दलों को यह समझना होगा कि चुनाव आते-जाते हैं, सरकारें बदलती हैं, लेकिन राजनीतिक संस्कार लंबे समय तक रहते हैं। भारत को मयार्दा-युक्त विरोध चाहिए। आक्रामकता लोकतांत्रिक राजनीति की ऊर्जा हो सकती है, लेकिन अभद्रता उसकी शक्ति नहीं बन सकती। सत्ता बदल सकती है, दल बदल सकते हैं, लेकिन सार्वजनिक भाषा के संस्कार समाज में लंबे समय तक रहते हैं। इसलिए राजनीति को जीतने से पहले अपने शब्दों को जीतना होगा।

एथनॉल नीति पर फिर से विचार हो

केंद्र सरकार ने 10 साल में पहली बार चीनी आयात करने का फैसला लिया है। चीनी अब डॉलर देकर विदेश से मंगाई जाएगी। जबकि 2022 तक ईयू और यूएस को तय कोटा निर्यात के बाद यह प्रतिबंध लगाना पड़ता था कि अब और चीनी निर्यात नहीं की जाए, जिससे घरेलू मांग की पूर्ति आसान बनी रहे और चीनी महंगी भी न हो। अब यह स्थिति निर्मित हो गई है कि घर-घर में इस्तेमाल की जाने वाली चीनी का भंडार पिछले साल की तुलना में 20 प्रतिशत कम हो गया है। इस कमी का प्रमुख कारण गन्ने का उपयोग एथनाल बनाने में किया जाना माना जा रहा है। भारत में पहले से ही अनाज से शराब बनाई जा रही है। खाद्य उपज से पेट्रोल और शराब का बड़ी मात्रा में निर्माण नीति-नियंताओं की अदूरदर्शिता प्रकट करती है। बीते दो माह के भीतर चीनी की कीमतें उछलकर 40 प्रतिशत तक बढ़ गई हैं। आगे रक्षाबंधन, गणेश महोत्सव और कृष्ण जन्माष्टमी जैसे बड़े त्योहार हैं, जिनमें मिठाई और प्रसाद वितरण के लिए चीनी की बड़ी मांग बनी रहती है। इसके तत्काल बाद नवदुर्गा, विजयदशमी और दीपावली जैसे बड़े पर्व हैं, जिनमें चीनी की सर्वाधिक खपत होती है। यदि समय पर चीनी आयात नहीं हो पाती है तो चीनी के दाम आसमान छूने लग जाएंगे। हालांकि सरकार यह जता रही है कि पेट्रोल में एथनाल की मात्रा बढ़ाने से चीनी महंगी नहीं हुई है, बल्कि खराब मौसम के चलते गन्ने की फसल की कम पैदावार के कारण देश में चीनी का उत्पादन कम हुआ है। सरकार एक अन्य कारण अंतरराष्ट्रीय बाजार में चीनी के दामों में वृद्धि बता रही है। सरकार ई-20 एथनाल पेट्रोल के उत्पादन पर अंकुश लगाने को तैयार नहीं है। यही कारण है कि सरकार ने ई-10 यानी 10 प्रतिशत एथनाल मिश्रित पेट्रोल बनाने के सुझावों को सिरे से खारिज कर दिया है। देश में एथनाल उत्पादन की क्षमता तेजी से बढ़कर 2000 करोड़ लीटर प्रतिवर्ष से ज्यादा हो गई है, जबकि पेट्रोल वाहनों में एथनॉल मिला पेट्रोल उपयोग करने से वाहन का माइलेज प्रभावित हो रहा है। बावजूद इसके एथनाल निर्माण के नए संयंत्रों का निर्माण हो रहा है। इस सेक्टर को बैंकों ने एक लाख करोड़ रुपये का कर्ज दिया हुआ है। अब सरकार की दुविधा यह है कि यदि पेट्रोल में ब्लेंडिंग घटाई गई तो हजारों करोड़ के बैंक ऋण और देसी-विदेशी निवेश डूबने का संकट बढ़ जाएगा। ब्लेंडिंग उस प्रक्रिया को कहते हैं, जिसके तहत एक तय मात्रा में बायो फ्यूल, यानी ई-20 या ई-10 प्रतिशत पेट्रोल में एथनाल मिलाया जाता है। हालांकि यह जीवाश्म ईंधन जलवायु परिवर्तन पर अंकुश लगाने के लिए पर्यावरण के अनुकूल है। इस कारण तमाम देश जैव ईंधन का उत्पादन बढ़ाने में लगे हैं। चालू वित्त वर्ष के अंत तक एथनाल उत्पादन क्षमता 400 करोड़ लीटर और बढ़ जाएगी। अर्थात कुल उत्पादन क्षमता करीब 2,400 करोड़ लीटर तक पहुंच जाने की उम्मीद है। जबकि 2014 में एथनाल का उत्पादन 421 करोड़ लीटर प्रतिवर्ष होता था, जो अब चार गुना अधिक हो गया है। चालू वित्त वर्ष के दौरान पेट्रोल ब्लेंडिंग के लिए ई-20 पेट्रोल के लिए 1,200 करोड़ लीटर एथनाल की जरूरत पड़ेगी। यही नहीं, उद्योगों, फार्मा कंपनियों और रसायन क्षेत्रों में भी 350 लीटर एथनाल की मांग बनी हुई है। 2025 से देश में ई-20 पेट्रोल की बिक्री हो रही है। लगता है पिछले कुछ समय से अमेरिका-ईरान, रूस-यूक्रेन और इजरायल के युद्धों के चलते केंद्र सरकार ने एथनाल मिश्रित पेट्रोल को और बढ़ावा देने का मन बनाया है। इधर एथनाल के नए संयंत्र लगाए जाने के कारण उद्योग जगत की मांग है कि ई-30 या उससे अधिक एथनाल मिश्रित पेट्रोल की बिक्री देशभर में शुरू की जाए। फिलहाल देश में गन्ना, मक्का और अन्य अनाजों से बने एथनाल के निर्यात पर प्रतिबंध लगाया जाए, क्योंकि यदि खाद्य सामग्री से बना एथनाल निर्यात होने लगा तो देश में अनाज की आपूर्ति में कमी तो आएगी ही, अनाज महंगा भी हो जाएगा। हालांकि वर्तमान में कृषि अवशेष और बायोमास से निर्मित एथनाल के निर्यात की अनुमति सितंबर 2025 से दे दी गई है, किंतु उद्योग जगत मांग कर रहा है कि सरकार नेपाल और इंडोनेशिया जैसे देशों में निर्यात की संभावनाएं तलाशे। अनाज, फल-सब्जी जैसी वस्तुएं आदमी के जिंदा रहने की बुनियादी शर्त हैं, पर आधुनिक जीवनशैली के लिए जरूरी बना दिए गए औद्योगिक उत्पादन और भौतिक उपकरणों को ऊर्जा उपलब्ध कराने के लिए वैकल्पिक स्रोतों में फसलों का बड़े पैमाने पर इस्तेमाल दुनिया भर में हो रहा है। खाद्य संकट बनाए रखने के कारणों में यह एक प्रमुख कारण है। यदि जैविक ईंधन के लिए अनाज के प्रयोग को खुली छूट दे दी जाती है तो भारत में भूख का संकट गहरा सकता है। ऐसे में वाहनों के उत्पादन को बढ़ाना और बैंकों के कर्ज के जरिये उनकी बिक्री आसान करना भूख की स्थिति को और गंभीर बनाएगी। इस सिलसिले में ब्रिटेन की स्वयंसेवी संस्था आक्सफेम ने दुनिया में बढ़ रहे खाद्यान्न संकट के सिलसिले में चेतावनी दी है कि यदि अनाज से शराब और एथनाल बनाना बंद नहीं किया तो 2030 तक खाद्यान्न की मांग 70 प्रतिशत तक बढ़ सकती है और अनाज की कीमतें भी दोगुनी हो सकती हैं। ऐसे में एथनाल नीति पर फिर से विचार होना चाहिए।

प्यूपिल्स टाइम्स विशेष शोध-श्रृंखला

2026 का छात्र-आंदोलन : कक्षा से संसद तक

स्वायत्तता से विस्तार तक-जब कक्षा का प्रश्न संसद तक पहुँचा

भाग-4 (खण्ड-2)

संसद में गतिरोध : जब तीनों सही हों फिर भी बात न बने

विस्तार का अंतिम पड़ाव संसद था। 22 जुलाई को संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने कहा सरकार NEET पर चर्चा को तैयार है और नियम, तिथि तय करने को सर्वदलीय बैठक का आग्रह किया। दूसरी ओर मल्लिकार्जुन खड़गे सहित विपक्ष ने नियम 267 के तहत चर्चा और शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे को जोड़ा। सरकार का तर्क था चर्चा होनी चाहिए, विपक्ष का तर्क था जवाबदेही भी तय हो।

फलतः 22 जुलाई को दोनों सदन स्थगित हुए और 24 जुलाई तक गतिरोध रहा। यहाँ द्वंद्व है-यदि छात्र संसद में चर्चा चाहता है तो क्या गतिरोध उसी उद्देश्य को कमजोर नहीं करता? पर यदि विपक्ष जवाबदेही के लिए दबाव बनाना चाहता है तो क्या विरोध संसदीय राजनीति का स्वीकृत उपकरण नहीं? इसलिए यह आंदोलन अब छात्र बनाम सरकार नहीं, विरोध बनाम संवाद और जवाबदेही बनाम कार्यक्षमता के संतुलन का प्रश्न बन गया। सड़क पर छात्र कह रहा था "हमें उत्तर चाहिए", संसद में विपक्ष कह रहा था "सरकार जवाब दे", सरकार कह रही थी "हम चर्चा को तैयार हैं"। तीनों में लोकतांत्रिक आकांक्षा है, समस्या उत्तर और प्रक्रिया के बीच गतिरोध है।

नए मंच और जनविश्वास की परीक्षा

इस दौरान Cockroach Janta Party (CJP) जैसे नए मंचों की सक्रियता भी दिखी, 20 जुलाई को इसी मंच से जुड़े मार्च में बड़ी संख्या में प्रदर्शनकारी जंतर-मंतर पर एकत्र हुए। किसी नए मंच को केवल गैर-पारंपरिक होने से खारिज करना या केवल मंच देने से जनप्रतिनिधि मान लेना दोनों जल्दबाजी है। समाजशास्त्रीय प्रश्न है-क्या युवा पारंपरिक दलों से अलग अभिव्यक्ति-स्थल बना रहा है? क्या आंदोलन मंचों को जन्म देते हैं या मंच आंदोलनों से वैधता लेते हैं? इसका उत्तर इतिहास देगा। अंततः आंदोलन की शक्ति भीड़ में नहीं, जनविश्वास में है। भीड़ दृश्यता देती है, विश्वास वैधता। जैसे-जैसे हितधारक बढ़ते हैं, संदेश के कई संस्करण बनते हैं - छात्र की मांग एक, दल की व्याख्या दूसरी, मीडिया की प्रस्तुति तीसरी।

यही फ्रेमिंग का प्रश्न है।

तीन शक्तियों का संतुलन

यात्रा को तीन शक्तियों से समझा जा सकता है। पहली- छात्रों की स्वायत्तता, जिसने प्रश्न जन्मा। दूसरी-राजनीतिक प्रतिनिधित्व, जिसने प्रश्न को संसद पहुँचाया। तीसरी-संस्थागत उत्तरदायित्व, जिस पर सरकार और परीक्षा संस्थाएँ परखी जाएंगी। संतुलन हो तो सुधार संभव है। स्वायत्तता खत्म हो तो आंदोलन केवल राजनीति का विस्तार बनेगा, प्रतिनिधित्व न हो तो आवाज संस्था तक नहीं पहुँचेगी, उत्तरदायित्व कमजोर हो तो विस्तार के बाद भी समस्या रहेगी। इसलिए प्रश्न यह नहीं कि राजनीति आए या नहीं, प्रश्न यह है कि आने के बाद मूल प्रश्न कितना सुरक्षित रहा।

Pupils Times का निष्कर्ष

एक विद्यार्थी ने परीक्षा की निष्पक्षता पर प्रश्न किया, उससे परिवार जुड़ा, समाज जुड़ा, मीडिया जुड़ा और प्रश्न संसद पहुँचा। यह लोकतंत्र की शक्ति भी है और चुनौती भी। विस्तार तभी सार्थक है जब मूल उद्देश्य नष्ट न हो। यदि प्रतिनिधित्व आवाज को मंच देता है तो लोकतंत्र मजबूत होता है, यदि प्रतिस्पर्धा मूल प्रश्न पर हावी हो तो पहचान की चुनौती आती है। 2026 की ऐतिहासिकता अभी तय नहीं, पर इतना स्पष्ट है कि एक परीक्षा से उठे प्रश्न ने बड़े प्रश्न रखे-पारदर्शिता कितनी हो, जवाबदेही किसकी हो, विरोध की सीमा क्या हो और क्या संस्था की वैधता केवल निर्णय से नहीं, प्रक्रिया की पारदर्शिता से भी तय होगी? यहीं यह आंदोलन परीक्षा-विवाद से आगे नागरिक सक्रियता का दस्तावेज बन जाता है।

अगले अध्याय में-अध्याय-5 : माइक, कैमरा और मंच

जब आंदोलन जनमत का विषय बनता है, तब मीडिया, सोशल मीडिया और राजनीतिक संचार उसकी छवि कैसे गढ़ते हैं? क्या कैमरा केवल दिखाता है या यह भी तय करता है कि जनता आंदोलन को किस रूप में देखे?

बड़ी गणेश मूर्तियों के लिए फिटनेस सर्टिफिकेट जरूरी नहीं: बीएमसी

मुंबई: बृहन्मुंबई महानगरपालिका ने साफ किया है कि गणेशोत्सव 2026 से पहले, एक टन से ज्यादा वजन वाली गणेश मूर्तियों सहित बड़ी गणेश मूर्तियों के लिए फि टनेस सर्टिफि केट जरूरी नहीं है। यह साफ किया गया है कि यह सर्टिफिकेशन उन रिपोर्ट्स और सोशल मीडिया मैसेज के बाद आया है जिनमें दावा किया गया था कि गणेशोत्सव मंडलों को भारी मूर्तियों के लिए फिटनेस सर्टिफिकेट लेना होगा। कुछ रिपोर्ट्स में यह भी कहा गया था कि मूर्ति बनाने वालों और मंडलों को मूर्ति बनने से लेकर उसकी डिलीवरी तक का पूरा रिकॉर्ड रखना होगा। BMC ने दोनों दावों को नकार दिया है और कहा है कि ऐसे कोई निर्देश या जरूरी शर्तें शुरू नहीं की गई हैं या उन्हें अंतिम रूप नहीं दिया गया है। BMC ने गणेश मूर्तियों के फिटनेस सर्टिफिकेट पर रिपोर्ट्स को गलत बताया, बुधवार, 26 अगस्त को जारी एक बयान में, सिविक बॉडी ने कहा कि गणेश मूर्तियों के लिए फिटनेस सर्टिफिकेट जरूरी होने का दावा करने वाली रिपोर्ट्स गलत हैं। BMC ने यह भी साफ किया कि उसने गणेश मूर्तियों के लिए वजन के आधार पर सर्टिफि केशन सिस्टम शुरू करने का फैसला नहीं किया है। इसलिए, अभी मंडलों को एक टन से ज्यादा वजन वाली मूर्तियों के लिए फिटनेस सर्टिफिकेट लेने की कोई जरूरत नहीं है। सिविक एडमिनिस्ट्रेशन ने गणेशोत्सव कमेटियों, भक्तों और नागरिकों से सोशल मीडिया और दूसरे प्लेटफॉर्म पर चल रही बिना वेरिफाई की गई जानकारी पर विश्वास करने या उसे फॉरवर्ड करने से बचने की अपील की। BMC ने एक ऐसे प्रस्तावित सिस्टम की रिपोर्ट्स को भी खारिज कर दिया है जिसके तहत गणेश मूर्ति के बनने से लेकर उसके संबंधित मंडल तक पहुँचने तक उसकी पूरी जानकारी रखनी

होगी। सिविक बॉडी के मुताबिक, मूर्ति बनाने वालों या गणेशोत्सव कमेटियों को ऐसे रिकॉर्ड रखने के लिए कोई निर्देश जारी नहीं किया गया है। यह सफाई उन खबरों के बीच आई है कि हाल ही में भुलेश्वर में हुई मूर्ति दुर्घटना के बाद अधिकारी बड़ी गणेश मूर्तियों के ट्रांसपोर्टेशन और आगमन के लिए एक बड़े सुरक्षा फ्रेमवर्क पर विचार कर रहे थे। हालांकि BMC ने जरूरी सर्टिफिकेशन और रिकॉर्ड रखने की जरूरतों को लागू करने से इनकार किया है, लेकिन उसने गणेश मूर्तियों के आगमन के जुलूस के दौरान सुरक्षा के महत्व पर जोर दिया है।

गणेशोत्सव मंडलों को मूर्तियों के ट्रांसपोर्टेशन और आगमन की योजना बनाते समय मुंबई पुलिस, ट्रैफि क अधिकारियों और इटउ के साथ तालमेल बिठाने के लिए कहा गया है। इस तरह के तालमेल का मकसद त्योहार के दौरान ट्रैफि क मैनेजमेंट को आसान बनाना और सुरक्षा जोखिमों को कम करना है। नागरिक प्रशासन ने आयोजकों को मूर्ति ट्रांसपोर्टेशन और उससे जुड़ी गतिविधियों की व्यवस्था करते समय उचित सावधानी बरतने की जरूरत पर भी जोर दिया है। गणेशोत्सव 2026 की तैयारियों के साथ, BMC ने आयोजकों और भक्तों से बिना वेरिफाई किए सोशल मीडिया पोस्ट या रिपोर्ट के बजाय आधिकारिक बातचीत पर भरोसा करने का आग्रह किया है। फिलहाल, नगर निकाय ने यह स्पष्ट कर दिया है कि एक टन से अधिक वजन वाली गणेश मूर्तियों के लिए कोई अनिवार्य फिटनेस प्रमाणपत्र नहीं है और मूर्तियों के निर्माण से लेकर डिलीवरी तक उन्हें ट्रैक करने की कोई अनिवार्य व्यवस्था नहीं है। फिर भी, बीएमसी ने गणेशोत्सव समितियों को सुरक्षा को प्राथमिकता देने, संबंधित अधिकारियों के साथ समन्वय करने और मूर्ति आगमन और त्योहार संबंधी गतिविधियों के दौरान आधिकारिक निदेशों का पालन करने की सलाह दी है।

दही हांडी के खेल को कॉमनवेल्थ और ओलंपिक तक ले जाने की कोशिश करेगी राज्य सरकार : मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस

मुंबई: गोविंदा महाराष्ट्र की संस्कृति और मुंबई की पहचान है। 'प्रो गोविंदा' के जरिए यह खेल पूरे भारत और दुनिया तक पहुंचा है। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने भरोसा दिलाया कि राज्य सरकार गोविंदा के इस एडवेंचरस खेल को ऑल-इंडिया लेवल पर पहचान दिलाने और इसे एशियाड, कॉमनवेल्थ और आगे ओलंपिक तक ले जाने की कोशिश करेगी। प्रो गोविंदा लीग 2026 सीजन 4 का उद्घाटन समारोह मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस की मौजूदगी में वर्ली के SVP स्टेडियम में हुआ। उस समय मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस बोल रहे थे। ट्रांसपोर्ट मिनिस्टर प्रताप सरनाइक, मुंबई म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन की मेयर रितु तावड़े, MLA रंजीत पाटिल, लीग प्रेसिडेंट पूर्वेश सरनाइक, मिसेज शायना एन. सी मौजूद थीं। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि दही हांडी उत्सव को एक मॉडर्न और प्रोफेशनल स्पोर्ट्स कॉम्पिटिशन देने के मकसद से शुरू की गई प्रो गोविंदा लीग (PGL) देश में इंसानी मीनार बनाने के खेल की पहली प्रोफेशनल लीग के तौर पर जानी जाती है। दही हांडी सिर्फ एक त्योहार नहीं बल्कि एक ऐसी पहल है जो समाज को एक साथ लाती है और सामाजिक एकता का संदेश देती है। मुख्यमंत्री ने भरोसा दिलाया कि सरकार इस खेल को ओलंपिक एसोसिएशन और उससे जुड़े खेल संगठनों से ऑल इंडिया लेवल पर पहचान दिलाने और फिर इस खेल को एशियन गेम्स, कॉमनवेल्थ और आखिर में ओलंपिक तक ले जाने के लिए हर मुमकिन मदद करेगी। इस मौके पर मुख्यमंत्री ने सभी गोविंदा टीमों, उनके कोच और गोविंदाओं का हौसला बढ़ाया और उन्हें शुभकामनाएं दीं।

कजरी महोत्सव के शिल्पकार : श्री दिनेश सिंह जी

लोकसंस्कृति को सम्मान और अंबरनाथ को सांस्कृतिक पहचान देने की अभिनव पहल

प्यूपिल्स टाइम्स संवाददाता

अंबरनाथ: लोकसंस्कृति और भोजपुरी माटी की सुगंध को जीवंत रखने की दिशा में अंबरनाथ महोत्सव सांस्कृतिक संस्था द्वारा आयोजित तृतीय कजरी महोत्सव 2026 एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक आयोजन बनने जा रहा है। आगामी 29 अगस्त को होने वाले इस महोत्सव के पीछे संस्था के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ पत्रकार श्री दिनेश सिंह जी की दूरदृष्टि, संगठन क्षमता और लोकसंस्कृति के प्रति समर्पण की महत्वपूर्ण भूमिका है।

श्री दिनेश सिंह जी ने अपने नेतृत्व में कजरी जैसी समृद्ध लोकपरंपरा को केवल मनोरंजन का माध्यम न मानकर उसे सम्मान, संरक्षण और नई पीढ़ी तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम बनाया है। पत्रकारिता के अनुभव और सांस्कृतिक सरोकारों के समन्वय से उन्होंने इस आयोजन को निरंतर व्यापक स्वरूप प्रदान किया है। कजरी केवल लोकगीत नहीं, बल्कि माटी की स्मृति, ऋतु की अनुभूति, लोकजीवन की संवेदना और हमारी सांस्कृतिक विरासत की सजीव अभिव्यक्ति है। ऐसे आयोजन अपनी जड़ों से जुड़ने का अवसर प्रदान करते हैं।

शिक्षा मंत्री दादाजी भुसे से मिला सीजेपी प्रतिनिधिमंडल, सरकारी स्कूलों की बदहाली पर किया ध्यानाकर्षित

मुंबई: महाराष्ट्र के सरकारी स्कूलों में बुनियादी सुविधाओं और विद्यार्थियों के लिए जरूरी व्यवस्थाओं को लेकर कॉकरोच जनता पार्टी 'सीजेपी' के प्रतिनिधिमंडल ने शिक्षा मंत्री दादाजी भुसे से मुलाकात की। प्रतिनिधिमंडल ने स्कूलों की समस्याओं को सरकार तक पहुंचाने और उनके समाधान के लिए एक समिति बनाने की मांग रखी। सीजेपी के मुंबई के समन्वयक प्रणय अहिरे ने बताया कि प्रतिनिधिमंडल की मुख्य मांग स्कूलों से जुड़ी समस्याओं के लिए एक ऐसा माध्यम तैयार करना है, जिसके जरिए विद्यार्थियों को नहीं मिल रही जरूरी सुविधाओं की जानकारी सरकार तक पहुंचाई जा सके। उन्होंने कहा कि इस व्यवस्था के माध्यम से सरकारी स्कूलों में बेहतर और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए जरूरी सुविधाओं को सामने लाने में मदद मिलेगी। अहिरे के अनुसार, इस पहल का उद्देश्य सरकारी स्कूलों की जमीनी समस्याओं को सामने

लाकर उनके समाधान के लिए सरकार के साथ मिलकर काम करना है। उन्होंने कहा कि सभी समस्याओं का तुरंत पूरी तरह समाधान संभव नहीं है, लेकिन उन्हें सरकार के संज्ञान में लाने और लगातार प्रयास करने की जरूरत है।

समिति बनाने की मांग: प्रतिनिधिमंडल ने सरकारी स्कूलों की मौजूदा स्थिति पर भी चिंता जताई। अहिरे ने कहा कि आजादी के इतने वर्षों बाद भी कई सरकारी स्कूलों में विद्यार्थियों को जरूरी सुविधाओं के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। इसी उद्देश्य से संगठन की ओर से देशव्यापी अभियान चलाया जा रहा है और सदस्य जमीनी स्तर पर स्कूलों की समस्याओं को सामने ला रहे हैं।

शिक्षा मंत्री भुसे ने दिया आश्वासन: प्रतिनिधिमंडल के मुताबिक, शिक्षा मंत्री दादाजी भुसे ने मांगों पर सकारात्मक रुख दिखाया है। उन्होंने स्कूलों से जुड़े मुद्दों पर आगे बातचीत के लिए एक अधिकारी को जिम्मेदारी भी सौंपी है। अब प्रतिनिधिमंडल उस अधिकारी के साथ संवाद कर सरकारी स्कूलों की समस्याओं और विद्यार्थियों को मिलने वाली सुविधाओं से जुड़े मुद्दों को सरकार तक पहुंचाएगा।

दोहा में हिन्दी की साधना, अयोध्या से विद्यावारिधि का सम्मान

डॉ. बालकृष्ण पाण्डेय की गौरवपूर्ण शैक्षणिक उपलब्धि

दोहा मॉडर्न इण्डियन स्कूल, कतर में कार्यरत विद्वान शिक्षक डॉ. बालकृष्ण पाण्डेय ने डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या से हिन्दी विषय में विद्यावारिधि (Ph.D.) की उपाधि प्राप्त कर गौरव अर्जित किया है। विदेश की धरती पर रहते हुए हिन्दी भाषा और साहित्य के प्रति उनकी निरन्तर साधना, गहन अध्ययन तथा शोध-निष्ठा इस उपलब्धि को विशेष बनाती है। यह सफलता उनके अथक परिश्रम और हिन्दी साहित्य के प्रति समर्पण का प्रमाण है।

उनकी उपलब्धि से परिवार, विद्यालय परिवार, सहकर्मियों, विद्यार्थियों तथा हिन्दी-प्रेमियों में हर्ष है। विद्यालय प्रबंधन एवं शुभचिंतकों ने उन्हें हार्दिक बधाई देते हुए उज्ज्वल शैक्षणिक एवं साहित्यिक भविष्य की कामना की।

प्यूपिल्स टाइम्स की ओर से डॉ. बालकृष्ण पाण्डेय को हार्दिक अभिनंदन एवं शुभकामनाएँ।

अंबरनाथ में श्रद्धा और सौहार्द के साथ निकला ईद मिलादुन्नबी का जुलूस

डॉ. जुबेर शाह की अपील पर अनुशासन, शांति और भाईचारे का संदेश बना आयोजन का केंद्र

गौरव सिंह/ प्यूपिल्स टाइम्स

अंबरनाथ: पैगम्बर-ए-इस्लाम हजरत मोहम्मद साहब के जन्मदिवस ईद मिलादुन्नबी के अवसर पर अंबरनाथ शहर में श्रद्धा और उत्साह के साथ भव्य जुलूस निकाला गया। आयोजन में बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया और पूरे मार्ग पर धार्मिक आस्था के साथ अमन, सौहार्द एवं भाईचारे का संदेश दिया। जुलूस का आयोजन अंबरनाथ मुस्लिम जमात के अध्यक्ष डॉ. जुबेर शाह के मार्गदर्शन तथा जुलूस कमेटी के अध्यक्ष यूसुफ कासिम शेख एवं ट्रस्टियों के समन्वय से किया गया। आयोजन से पूर्व डॉ. जुबेर शाह ने सहभागी नागरिकों से शांति एवं

अनुशासन बनाए रखने, निर्धारित मार्ग का पालन करने तथा यातायात एवं प्रशासनिक निदेशों का सम्मान करने की अपील की थी। जुलूस के दौरान पुलिस एवं प्रशासन की ओर से सुरक्षा और यातायात व्यवस्था सुनिश्चित की गई। प्रशासन के सहयोग एवं आयोजकों के समन्वय से जुलूस निर्धारित मार्ग से शांतिपूर्वक संपन्न हुआ।

समापन अवसर पर डॉ. जुबेर शाह ने पुलिस-प्रशासन, ट्रस्टियों, आयोजन समिति तथा सभी सहभागियों के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने ईद मिलादुन्नबी की शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि शांति, मानवता, सद्भाव और भाईचारे का संदेश समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुँचना चाहिए।

बॉम्बे उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति सुनील बालकृष्ण शुक्रे ने

महाराष्ट्र लोकायुक्त संस्था के नए अध्यक्ष के रूप में शपथ ली

मुंबई : बॉम्बे हाईकोर्ट के सेवानिवृत्त न्यायमूर्ति सुनील शुक्रे को महाराष्ट्र का नया लोकायुक्त नियुक्त किया गया है। मुंबई स्थित राजभवन में आयोजित एक समारोह में राज्यपाल जिष्णु देव वर्मा ने उन्हें पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई। शपथ ग्रहण के बाद मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस, उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे और महाराष्ट्र विधानसभा अध्यक्ष राहुल नार्वेकर ने राज्य की इस भ्रष्टाचार विरोधी संस्था के नए प्रमुख बने न्यायमूर्ति शुक्रे को बधाई दी। न्यायमूर्ति शुक्रे अक्टूबर 2023 में बॉम्बे हाईकोर्ट से सेवानिवृत्त हुए थे। इसके बाद, दिसंबर 2023 में राज्य सरकार ने उन्हें महाराष्ट्र राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग का अध्यक्ष नियुक्त किया। उन्होंने तत्कालीन अध्यक्ष सेवानिवृत्त न्यायमूर्ति आनंद निरगुडे के इस्तीफे के बाद यह जिम्मेदारी संभाली थी। सुनील शुक्रे ने राज्य भर में एक व्यापक सर्वेक्षण का नेतृत्व किया और फरवरी 2024 में मराठा समुदाय के पिछड़ेपन पर एक महत्वपूर्ण रिपोर्ट सौंपी। इसी रिपोर्ट के आधार पर राज्य सरकार ने मराठा समुदाय को 10 प्रतिशत आरक्षण देने का कानून पारित किया था। मराठा आरक्षण के मुद्दे पर जारी गहन राजनीतिक बहस के बीच महाराष्ट्र राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष के रूप में उनकी नियुक्ति काफी अहम मानी गई। आयोग को मराठा समुदाय के सामाजिक, शैक्षणिक और आर्थिक पिछड़ेपन को सिद्ध करने के लिए आनुभविक आंकड़े एकत्र करने का जिम्मा सौंपा गया था।

अपने न्यायिक करियर के दौरान, न्यायमूर्ति शुक्रे ने कोल्हापुर और नागपुर में प्रधान जिला न्यायाधीश तथा मुंबई उच्च न्यायालय की नागपुर पीठ में रजिस्ट्रार (प्रशासन) के रूप में कार्य किया। उन्हें 2013 में बॉम्बे हाई कोर्ट के न्यायाधीश के रूप में पदोन्नत किया गया, जहां से वह अक्टूबर 2023 में सेवानिवृत्त हुए। जस्टिस सुनील शुक्रे ने कॉलेज के बीच होने वाले लॉन टेनिस और बैडमिंटन टूनार्मेंट में जलगांव के एमजे कॉलेज का प्रतिनिधित्व भी किया है और खेलों में उनकी गहरी रुचि रही है। उनकी नियुक्ति से महाराष्ट्र के लोकायुक्त संस्थान को एक ऐसे पूर्व हाई कोर्ट जज का नेतृत्व मिला है, जिन्हें न्यायिक और प्रशासनिक मामलों का व्यापक अनुभव है। रिटायरमेंट के बाद, उन्होंने महाराष्ट्र में मराठा आरक्षण के लिए फिर से शुरू हुई कोशिशों के दौरान राज्य के पिछड़ा वर्ग आयोग की अध्यक्षता की थी। शपथ दिलाने से पहले, गवर्नर के सचिव प्रशांत नारनवारे ने जस्टिस शुक्रे की नियुक्ति की घोषणा करने वाला नोटिफिकेशन पढ़कर सुनाया। समारोह की शुरूआत वंदे मातरम, राष्ट्रगान और राज्य गीत के साथ हुई और समापन वंदे मातरम और राष्ट्रगान के साथ हुआ।

चंद्रकांत पाटिल ने दिए निर्देश

महाराष्ट्र की सेल्फ-फाइनेंस्ड यूनिवर्सिटी में बनेगा मराठी भाषा विभाग

मुंबई: राज्य की सभी सेल्फ-फाइनेंस्ड यूनिवर्सिटी में मराठी भाषा विभाग स्थापित करने के निर्देश उच्च एवं तकनीकी शिक्षा मंत्री चंद्रकांतदादा पाटिल ने दिए हैं। उन्होंने यूनिवर्सिटी में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को प्राथमिकता देने के साथ विद्यार्थी हित के विभिन्न उपक्रम प्रभावी ढंग से चलाने को कहा।

डॉ. होमी भाभा राज्य विश्वविद्यालय में चंद्रकांतदादा पाटिल की अध्यक्षता में राज्य की सेल्फ-फाइनेंस्ड यूनिवर्सिटी के प्रायोजक मंडल के अध्यक्षों और कुलपतियों के साथ समीक्षा बैठक हुई। इसमें राष्ट्रीय शैक्षणिक नीति 2020 के क्रियान्वयन, शैक्षणिक गुणवत्ता, प्रशासनिक कामकाज और विद्यार्थियों से जुड़े विभिन्न विषयों की विस्तार से समीक्षा की गई।

उच्च शिक्षा में मराठी को बढ़ावा

बैठक में राष्ट्रीय शैक्षणिक नीति के तहत प्रशिक्षण और चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम लागू करने की दिशा में यूनिवर्सिटी की ओर से की जा रही कार्रवाई की जानकारी ली गई। मंत्री ने सकल नामांकन अनुपात और स्नातक उपाधि पूर्णता अनुपात से संबंधित जानकारी नियमित रूप से अखिल भारतीय उच्च शिक्षा सर्वेक्षण के संकेतस्थल पर दर्ज करने तथा उच्च एवं तकनीकी शिक्षा विभाग के सूचना फलक पर आवश्यक जानकारी अद्यतन रखने के निर्देश दिए।

विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर जोर

पाटिल ने यूनिवर्सिटी को शैक्षणिक गुणवत्ता बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद और राष्ट्रीय प्रत्यायन मंडल से मान्यता प्राप्त करने की प्रक्रिया तेज करने को कहा। साथ ही राष्ट्रीय संस्थागत क्रम निर्धारण में यूनिवर्सिटी की भागीदारी बढ़ाने के लिए जरूरी कदम उठाने के निर्देश दिए। उन्होंने सभी प्रवेशित विद्यार्थियों के अपार पहचान पत्र बनाने और उनके शैक्षणिक जमा खाते से शत-प्रतिशत जोड़ने को कहा। विद्यार्थियों का राज्य और राष्ट्रीय स्तर के संबंधित संकेतस्थलों पर पंजीकरण भी सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए।

उच्च शिक्षा में मराठी को बढ़ावा देने की तैयारी

कम आय वर्ग के विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा का अवसर देने के लिए 10 प्रतिशत विद्यार्थियों को 50 प्रतिशत शुल्क में छूट देने के विषय पर भी चर्चा हुई। पाटिल ने यूनिवर्सिटी से सामाजिक जिम्मेदारी निभाते हुए विद्यार्थी हित में आवश्यक कदम उठाने को कहा। बैठक में यूनिवर्सिटी के विभिन्न वैधानिक मंडलों के कामकाज की भी समीक्षा की गई। अपर मुख्य सचिव बी. वेणुगोपाल रेड्डी ने यूनिवर्सिटी को वार्षिक रिपोर्ट समय पर प्रस्तुत करने के निर्देश दिए।

जन्मदिन पर आरोग्य की मंगलकामना

श्रीमती सविता मिश्रा जी को जन्मदिन की हार्दिक बधाई एवं शीघ्र पूर्ण स्वास्थ्य की शुभकामनाएँ

तीन सितंबर को जन्मदिन के शुभ अवसर पर प्यूपिल्स टाइम्स परिवार की ओर से श्रीमती सविता मिश्रा जी को हार्दिक बधाई एवं अशेष मंगलकामनाएँ।

यह जन्मदिन आपके जीवन में स्वास्थ्य, सुख, शांति और नई ऊर्जा लेकर आए इसी मंगलभावना के साथ हम भगवान महादेव से प्रार्थना करते हैं। इस वर्ष आपकी स्पाइन सर्जरी हुई और ईश्वर की कृपा से शल्यक्रिया सफल रही। वर्तमान में चिकित्सकों की सलाह के अनुसार आप स्वास्थ्य-लाभ के लिए विश्राम कर रही हैं। पैर उठाने पर एड़ी और पंजे में होने वाले दर्द से आपको शीघ्र पूर्ण राहत मिले और आपका स्वास्थ्य निरंतर बेहतर हो यही हमारी विशेष प्रार्थना है। महादेव की कृपा से आप शीघ्र स्वस्थ होकर पुनः अपने परिवार के बीच उसी प्रसन्नता, उत्साह और सक्रियता के साथ जीवन व्यतीत करें।

आपके उत्तम स्वास्थ्य, दीर्घायु, सुख-समृद्धि एवं मंगलमय जीवन की हृदय से कामना।

प्यूपिल्स टाइम्स परिवार की ओर से जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएँ। महादेव आपको शीघ्र पूर्ण स्वास्थ्य एवं दीर्घायु प्रदान करें।

कामगार नगर में गूँजा महामृत्युंजय महामंत्र

शिव-आराधना से शिवमय हुआ कुर्ला पूर्व

उद्योग से अध्यात्म तक : समाजसेवी श्री गौरीशंकर तिवारी जी के निवास पर सात दिवसीय महायज्ञ सम्पन्न

अमरनाथ तिवारी

मुंबई: कुर्ला पूर्व के कामगार नगर में सात दिनों तक गूँजे महामृत्युंजय मंत्रों से वातावरण भक्तिमय बना रहा। प्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाजसेवी श्री गौरीशंकर तिवारी जी के निवास पर आयोजित सवा लाख महामृत्युंजय मंत्र जाप एवं महायज्ञ वैदिक परंपरा और श्रद्धापूर्वक संपन्न हुआ। सात दिवसीय अनुष्ठान में वैदिक मंत्रोच्चार, विधिवत पूजन-अर्चन, महामृत्युंजय मंत्र का जाप तथा माँ दुर्गा के आह्वान सहित नौ पाठ संपन्न हुए। 22 अगस्त को पूर्णाहुति एवं प्रसाद वितरण के साथ महायज्ञ का समापन हुआ। इस अवसर पर श्रद्धालुओं, परिजनों, सहयोगियों एवं गणमान्यजनों ने उपस्थित होकर भगवान शिव की आराधना की तथा सुख, शांति, आरोग्य और लोककल्याण की कामना की।

2010 से निरंतर धर्म-साधना की परंपरा

श्री गौरीशंकर तिवारी जी की यह धर्म-साधना किसी एक आयोजन तक सीमित नहीं है। वर्ष 2010 से वे निरंतर इस धार्मिक परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं। उद्योग जगत में अपनी सक्रिय भूमिका के साथ धर्म, संस्कार और सामाजिक सेवा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता भी उल्लेखनीय रही है। उनकी विशेषता आस्था को सेवा से जोड़ने में दिखाई देती है। इसी भावना के अंतर्गत उन्होंने हाल ही में 11 निर्धन कन्याओं के विवाह का संकल्प लिया है, जो उनके सामाजिक सरोकारों को दशार्ता है। महायज्ञ के समापन अवसर पर उपस्थित लोगों ने श्री तिवारी जी की धर्मनिष्ठा, सेवाभाव और सामाजिक प्रतिबद्धता की सराहना करते हुए उनके स्वस्थ एवं यशस्वी जीवन की मंगलकामना की।

प्यूपिल्स टाइम्स विशेष- धर्म और सेवा का संगम

श्री गौरीशंकर तिवारी जी की वर्षों से चली आ रही धर्म-साधना यह संदेश देती है कि जीवन में प्राप्त सामर्थ्य का सर्वोत्तम उपयोग समाज, संस्कार और सेवा के लिए भी किया जा सकता है।

Result Guarantee Above 90% or Money Back
If U R Not Joining Home Tuitions Then U R Missing Many Things
Mumbai's No.1 Premium Home Tuitions Academy
MUMBAI HOME & PRIVATE TUITIONS
1st to 10th ICSE / CBSE / IB / IGCSE / NIOS / State Boards
XI & XII Sci / Comm. IIT, NEET, MHT-CET
Engg, Degree, Diploma, B.Com, Bsc., BMS, MBA, Gmat, Cat, CET, English Speaking
Rajendra Deshmukh MANAGING DIRECTOR
Any Class Home Tuitions Across Mumbai
Get Admission in MBBS
NEET Qualified / Unqualified Fees 25 Lacs (Inc. Food Acc.)
ADMISSIONS OPEN
Branches : Andheri - Worli - Jogeshwari - Malad - Badar - Borivali - Virar
Thane - Vashi - Nerul - Kharghar - Ambernath - Badlapur
Home Tuitions Benefits
Contact : 902 902 9222 / 80 80 80 34 12 / 8446642380 / 9209128153
https://www.mumbaihometutors.com

PRIME KEYS PROPERTIES
Beyond Dreams
BUY | SELL | RENT
FLATS · SHOPS · BUNGALOWS
LANDS · REDEVELOPMENT
Trusted Property Consultant
Residential & Commercial Deals
Best Market Price Assistance
Contact:
+91 9167378057
Your Dream Property, Our Priority

DR. ZUBER SHAH HOSPITAL & POLYCLINIC
Ambernath (W), Maharashtra
Nursing Home Reg. No.: THN-C274*
FACILITIES AVAILABLE
24x7 Emergency Care - Immediate Critical Support
Diabetology & Advanced Diabetic Care
Fever Treatment (Dengue, Chikungunya, Malaria, Influenza)
Cardiology Checkup & ECG Facility
General Medicine Consultation
Vaccination & Immunization Services
Minor Surgical Procedures
OPD & IPD Care Available
Complete Health Checkups
24 HOURS EMERGENCY SERVICE AVAILABLE
DR. ZUBER S. SHAH
M.B.B.S (Reg. No. 2024020955)
Cert. in Diabetology & Emergency Medicine
+91 9323594085 / 8237304085 | Buvapada, K B Road, Ward No. 2/2, Ambernath West, Thane
Woolen Chawl OPD : 8:00 pm to 11:30 pm | OPD Amber Care : 8149477110

प्यूपिल्स टाइम्स

रोज चबाएं अमरूद का पत्ता कब्ज से मिलेगा छुटकारा और भी है कई फायदे

■ डॉ. आशीष मिश्रा
श्रीराम पॉलिक्लिनिक व आयुर्वेदिक दवाखाना

आजकल खराब खानपान, कम पानी पीना, फाइबर की कमी और शारीरिक गतिविधि कम होने के कारण कब्ज की समस्या आम होती जा रही है। पेट ठीक से साफ न होना, मल त्याग में कठिनाई, पेट फूलना और भारीपन जैसी परेशानियां दैनिक जीवन को प्रभावित कर सकती हैं। ऐसे में घरेलू नुस्खों में अमरूद के पत्तों का इस्तेमाल भी किया जाता है। आयुर्वेद और पारंपरिक चिकित्सा में अमरूद के फल के साथ इसकी पत्तियों का भी उपयोग होता आया है। हालांकि किसी भी घरेलू उपाय को कब्ज का पक्का इलाज समझने के बजाय खानपान और जीवनशैली में सुधार के साथ अपनाना ज्यादा उचित है। अमरूद को फाइबर से भरपूर फल माना जाता है, इसलिए कब्ज से परेशान लोगों को अक्सर इसे संतुलित आहार में शामिल करने की सलाह दी जाती है। वहीं अमरूद की पत्तियों में पॉलीफेनॉल, फ्लेवोनॉइड और टैनिन जैसे कई पादप यौगिक पाए जाते हैं। इन यौगिकों पर विभिन्न स्वास्थ्य प्रभावों को लेकर शोध हुए हैं, लेकिन रोज कच्चे अमरूद के पत्ते चबाने से कब्ज ठीक होने का मजबूत वैज्ञानिक प्रमाण अभी सीमित है। पारंपरिक तौर पर कुछ लोग सुबह साफ और कोमल अमरूद की पत्तियों को अच्छी तरह धोकर चबाते हैं, जबकि कई लोग इन्हें पानी में उबालकर हर्बल चाय के रूप में लेते हैं। माना जाता है कि इससे पाचन से जुड़ी कुछ परेशानियों में आराम महसूस हो सकता है। हालांकि कब्ज में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका पर्याप्त फाइबर, पानी और नियमित शारीरिक गतिविधि की होती है। फल, सब्जियां, साबुत अनाज और दालों को भोजन में शामिल करना पाचन स्वास्थ्य के लिए अधिक भरोसेमंद तरीका है। अमरूद की पत्तियों को लेकर किए गए अध्ययनों में इनके संभावित एंटीऑक्सीडेंट गुणों पर भी ध्यान दिया गया है। पौधों में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट शरीर में ऑक्सीडेटिव तनाव से निपटने में भूमिका निभा सकते हैं। अमरूद

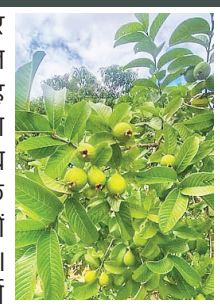

के पत्तों में मौजूद विभिन्न बायोएक्टिव कंपाउंड इसी वजह से शोधकताओं की दिलचस्पी का विषय बने हुए हैं। हालांकि प्रयोगशाला में किसी तत्व के फायदे दिखाई देने और रोज पत्ता चबाने से इंसानों में वही परिणाम मिलने के बीच बड़ा अंतर हो सकता है। अमरूद की पत्तियों का इस्तेमाल पारंपरिक रूप से मुंह की स्वच्छता के लिए भी किया जाता रहा है। कुछ अध्ययनों में अमरूद की पत्तियों के अर्क में रोगाणुओं के खिलाफ गतिविधि देखी गई है। यही वजह है कि कई पारंपरिक घरेलू उपायों में इनका इस्तेमाल मुंह की दुर्गंध और मसूड़ों की देखभाल के लिए किया जाता है। लेकिन दांत दर्द, मसूड़ों से खून आने या संक्रमण जैसी समस्या होने पर केवल पत्तियों पर निर्भर रहने के बजाय डेंटिस्ट की सलाह लेना जरूरी है। इसके अलावा अमरूद के पत्तों के अर्क और ब्लड शुगर के बीच संबंध पर भी शोध किए गए हैं। कुछ छोटे अध्ययनों में भोजन के बाद रक्त शर्करा के स्तर पर संभावित प्रभाव का संकेत मिला है। इसका मतलब यह नहीं है कि अमरूद के पत्ते डायबिटीज की दवाओं का विकल्प हैं। डायबिटीज से पीड़ित व्यक्ति अगर नियमित रूप से अमरूद के पत्तों की चाय या कोई हर्बल उत्पाद लेना चाहता है तो डॉक्टर से सलाह लेना बेहतर होगा, क्योंकि ब्लड शुगर कम करने वाली दवाओं के साथ इसका असर अलग हो सकता है।

'यह परिशिष्ट किसी एक मत या संप्रदाय का प्रचार नहीं, बल्कि मानवता, नैतिकता, आध्यात्मिकता और सहअस्तित्व के सार्वभौमिक मूल्यों का मंच है।'

'आध्यात्मिक संवाद'

बहन और भाई के प्रेम का प्रतीक है रक्षाबंधन

■ डॉ.रामजी मिश्रा

भारत त्योहारों और परंपराओं का देश है, जहां हर पर्व अपने साथ एक खास संदेश लेकर आता है। इन्हीं त्योहारों में रक्षाबंधन भाई-बहन के प्रेम, स्नेह, विश्वास और एक-दूसरे के प्रति जिम्मेदारी का प्रतीक माना जाता है। इस दिन बहन अपने भाई की कलाई पर राखी बांधती है और उसके सुखी एवं सुरक्षित जीवन की कामना करती है। वहीं भाई बहन की रक्षा और हर परिस्थिति में उसका साथ देने का संकल्प लेता है। रक्षाबंधन का पर्व श्रावण मास की पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। इसी वजह से इसे कई जगह राखी पूर्णिमा या केवल राखी भी कहा जाता है। रक्षाबंधन की तारीख हर साल बदलती है, क्योंकि यह हिंदू पंचांग के अनुसार मनाया जाता है। श्रावण पूर्णिमा का उजाला अपने साथ भाई-बहन के अटूट स्नेह का पर्व रक्षाबंधन लेकर आता है। इस बार 28 अगस्त 2026, शुक्रवार के दिन यह पावन त्योहार बड़े ही उल्लास के साथ मनाया जाएगा। यह केवल एक रेशमी धागा बांधने का नियम नहीं, बल्कि दो दिलों के आत्मीय रिश्ते का जश्न है। इस बार राखी पर यानी 28 अगस्त 2026 के दिन चंद्र ग्रहण लगने वाला है। ऐसे में सवाल उठता है कि फिर चंद्र ग्रहण कब से कब तक रहेगा और फिर रक्षा बंधन का त्योहार कब बनाएं? यदि आप पंचांग और शास्त्रों के नियमों को समझें तो आपको परेशान होने की रत्ती भर भी जरूरत नहीं है।

पूर्णिमा तिथि कब से कब तक रहेगी

- श्रावण पूर्णिमा की शुरूआत 27 अगस्त (गुरुवार) की सुबह 9:08 बजे से हो रही है।
- श्रावण पूर्णिमा का अंत 28 अगस्त (शुक्रवार) की सुबह 9:48 बजे होगा।
- उदयातिथि के अनुसार, रक्षाबंधन का पर्व 28 अगस्त को ही मनाया जाएगा।

तिलक और कलाई पर सुरक्षा का सूत्र

- भाई को पूर्व दिशा की ओर मुख करके लकड़ी के आसन (पाट) पर बिठाएं और उनके सिर पर सम्मानपूर्वक रुमाल या टोपी रखें।
- भाई की हथेली में नारियल और सवा रुपया देकर उनके माथे पर कुंकुम, हल्दी और अक्षत से दीप की छांव में मंगल-तिलक लगाएं।
- शुभ मुहूर्त में भाई की दाहिनी कलाई पर रक्षासूत्र (राखी) बांधें।

मंत्रोच्चार: राखी बांधते समय इस कल्याणकारी मंत्र का उच्चारण करें, जो हर विपत्ति से रक्षा करता है:

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः।
तेन त्वां अभिबन्धामि रक्षे मा चल मा चल।।

ग्रहण का प्रारंभ, अंत और प्रभाव:

प्रारंभ अंत: 28 अगस्त को चंद्र ग्रहण सुबह 6:55 बजे से शुरू होकर दोपहर 12:30 बजे समाप्त होगा।

प्रभाव: यह चंद्र ग्रहण भारत में दृश्य नहीं होगा। शास्त्रों का स्पष्ट विधान है कि जहां ग्रहण दिखाई नहीं देता, वहां उसका सूतक काल मान्य नहीं होता। इसलिए भारत में इसका कोई दोष या अशुभ प्रभाव नहीं पड़ेगा।

परिणाम: इसका अर्थ है कि 28 अगस्त 2026 को रक्षा बंधन का पर्व किसी भी शुभ मुहूर्त में मनाया जा सकता है।

राखी बांधने का सबसे शुभ समय:

सर्वश्रेष्ठ मुहूर्त : सुबह 06:23 से लेकर 09:48 के तक।

अभिजीत मुहूर्त : दोपहर 12:14 से लेकर दोपहर 01:05 तक।

गोधूलि मुहूर्त : शाम 06:57 से लेकर शाम 07:19 बजे तक।

नोट: राहुकाल: दिन में 11:05 से दोपहर 12:40 तक। इसलिए अभिजीत मुहूर्त में बांधते वक्त इसका ध्यान रखें। संक्षेप में कहें तो चंद्र ग्रहण का कोई भी छाया-दोष भारत में नहीं लग रहा है। बहनें बिना किसी हिचकिचाहट के अपने भाइयों की कलाई पर रक्षासूत्र बांधकर इस पावन पर्व को पूरे उत्साह के साथ मना सकती हैं।

पेज-1 का शेष

पीएम मोदी ने 'खेलो इंडिया डायलॉग' में एथलीटों से किया संवाद...

उन्होंने कहा कि सरकार का लक्ष्य युवाओं को विकसित भारत की यात्रा में सक्रिय भागीदार बनाना है। यह कार्यक्रम राष्ट्रीय खेल दिवस 2026 के तहत मेरा युवा भारत-माय भारत ने आयोजित किया। देशभर में हुए इस कार्यक्रम में राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के हर जिले के दो-दो कॉलेजों के युवाओं ने भाग लिया। कार्यक्रम में खेल, युवा नेतृत्व, नागरिक जिम्मेदारी, स्वयंसेवा, फिटनेस और राष्ट्र निर्माण जैसे विषयों को एक मंच पर लाया गया। खेलो इंडिया संवाद के माध्यम से युवाओं को देश की खेल संबंधी योजनाओं से सीधे जुड़ने और अपने विचार रखने का अवसर मिला। यह आयोजन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के स्वस्थ, अनुशासित और खेलप्रिय भारत के निर्माण तथा युवाओं की आकांक्षाओं को राष्ट्रीय विकास के केंद्र में रखने के दृष्टिकोण के अनुरूप है।

सीएम सम्राट चौधरी का ऐलान...

वहीं, बेटी स्टार्टअप चैलेंज के तहत महिला उद्यमियों को अपने उद्यम को आगे बढ़ाने के लिए सरकार 50 हजार से लेकर 2 लाख रुपये तक की वित्तीय सहायता देगी। लगभग 2100 महिलाओं को इस योजना का लाभ दिया जाएगा। नवाचार करने वालीं बेटियों को प्रोत्साहित किया जाएगा। सीएम सम्राट चौधरी ने एक दिन पहले ही बालिका पीएचडी फेलोशिप योजना की भी शुरूआत की। इसके तहत बच्चियों को उच्च शिक्षा के लिए बढ़ावा दिया जाएगा। पीएचडी करने वालीं छात्राओं को सरकार 4 साल तक हर महीने 10 हजार रुपये की आर्थिक सहायता देगी। इस योजना का लाभ 1000 छात्राओं को मिलेगा।

नेपाल बाढ़ में मृतकों का आंकड़ा 359 हुआ...

नेपाल के विदेश मंत्री शिशिर खनाल ने प्रतिनिधि सभा को बताया कि अलग-अलग जगहों से नेपाली सेना के 44 जवानों सहित 80 सुरक्षाकर्मी भी लापता हैं। अचानक आई बाढ़ से कुल 354 मेगावाट क्षमता वाले आठ चालू जलविद्युत परियोजना और नुवाकोट तथा रसुवा ज़िलों में निमार्णाधीन पांच परियोजनाओं को नुकसान पहुंचा है। नेपाली सेना, सशस्त्र पुलिस बल और नेपाल पुलिस के जवान बचाव और राहत कार्यों में जुटे हुए है। नेपाल के राष्ट्रपति रामचंद्र पौडेल ने अचानक आई बाढ़ से हुई जान-माल की हानि पर दुख जताया है।

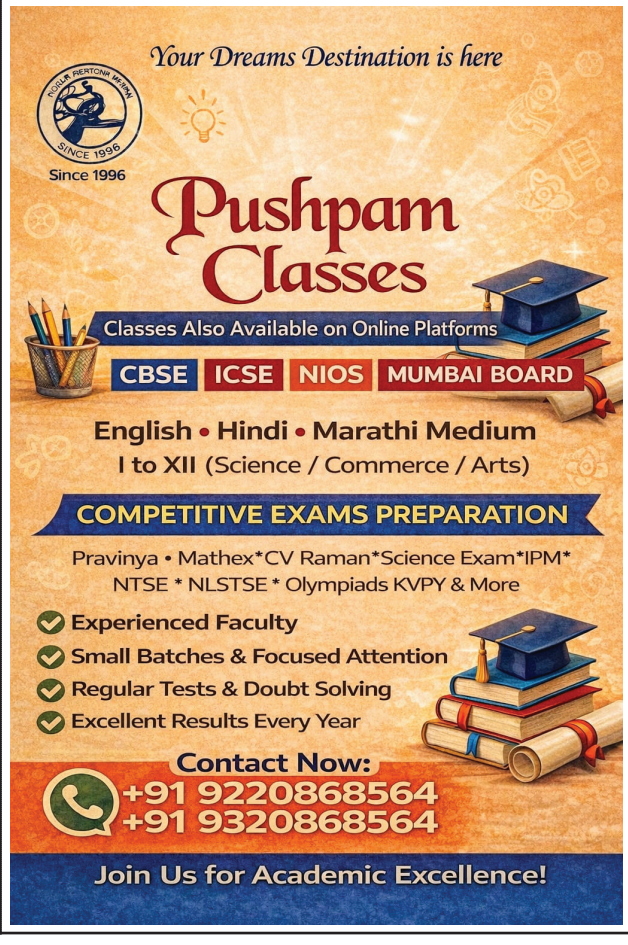

कुम्भस्य अर्थसङ्कल्पनायाः विषये प्रश्नाः, शिक्षायै अधिकं प्राधान्यम्

"0.1 प्रतिशतं धनं प्राप्तं चेत् १००-१२५ विद्यालयाः रक्षिताः अभविष्यन्"-सर्वोच्चन्यायालयस्य न्यायमूर्तेः टिप्पणी

प्यूपिल्स टाइम्स/ विशेषवार्ता

मुम्बई: नासिक-त्र्यंबकेश्वरयोः आयोज्यमानस्य सिंहस्थ-कुम्भमेलस्य सज्जतायाः मध्ये सर्वकारीयव्ययस्य शिक्षायाश्च प्राथमिकताविषये चर्चा प्रारब्धा अस्ति। सर्वोच्चन्यायालयस्य न्यायमूर्तिः प्रसन्न बी. वराले सर्वकारीयव्ययस्य प्राथमिकतानां विषये महत्त्वपूर्णं वक्तव्यं कृतवान्।

न्यायमूर्तिः वराले उक्तवान् यत् कुम्भमेलाय प्रस्तावितस्य अर्थसङ्कल्पस्य केवलं ०.१ प्रतिशतं धनमपि यदि शिक्षाक्षेत्राय प्रदत्तं स्यात्, तर्हि महाराष्ट्रस्य प्रायः १०० तः १२५ पर्यन्ताः मराठीमाध्यमविद्यालयाः बन्दात् रक्षिताः अभविष्यन्।

कुम्भमेला भारतस्य धार्मिक-

सांस्कृतिकपरम्परायाः महत्त्वपूर्णः उत्सवः अस्ति। श्रद्धालूनां सुरक्षा, स्वच्छता, यातायातव्यवस्था तथा अन्यासां सुविधानां कृते विशालः व्ययः क्रियते। तथापि, न्यायमूर्तेः वराले इत्यस्य टिप्पणीद्वारा एषः प्रश्नः उद्भूतः यत् शिक्षायाः इव मूलभूतक्षेत्राय सर्वकारीये अर्थसङ्कल्पे पर्याप्तं प्राधान्यं दीयते वा न वा।

सर्वकारीयविद्यालयाः विशेषतः ग्रामीणानां आर्थिकरूपेण दुर्बलपरिवाराणां च बालकानां कृते शिक्षायाः महत्त्वपूर्णं माध्यमम् अस्ति। विद्यालयानां बन्देन विद्यार्थिनां शिक्षायाः तेषां भविष्यस्य च प्रभावः भवितुं शक्नोति।

न्यायमूर्तेः वराले इत्यस्य टिप्पणी कुम्भमेलस्य विरोधरूपेण न, अपितु सर्वकारीयसम्पदां सन्तुलितप्रयोगस्य तथा शिक्षायाः सुदृढीकरणस्य आह्वानरूपेण द्रष्टव्या।

प्यूपिल्स टाइम्स-विशेषटिप्पणी: श्रद्धायाः विकासस्य च सह शिक्षायाः सुदृढीकरणमेव भाविपीढ्याः उज्ज्वलभविष्यस्य प्रमुखं आधारम् अस्ति।

विशेष-प्रतिवेदनम् यदि महिला हिंसाम् अनुभवति तर्हि किं कुर्यात्?

विवाहविच्छेदः अन्तिमः निर्णयः भवेत्, किन्तु सुरक्षा-सम्मान-न्यायस्य संघर्षः पूर्वमेव आरभ्यते

प्यूपिल्स टाइम्स ब्यूरो

गृहहिंसा केवलं प्रहारपर्यन्तं सीमिता नास्ति। दहेजस्य आग्रहः, निरन्तरम् अपमानः, भयप्रदर्शनम्, धनस्य नियन्त्रणं, मानसिकपीडनं च महिलायाः जीवनम् असुरक्षितं कर्तुं शक्नुवन्ति। एतादृशे समये प्रथमः प्रश्नः 'किं विवाहविच्छेदं स्वीकरोतु?' इति न, अपितु 'कथं स्वस्य सुरक्षा सुनिश्चितं करोतु?' इति भवेत्। महिलया स्वस्य स्थितिः विश्वसनीयजनैः सह अवश्यं कथनीया। आपत्काले ११२ तथा साहाय्यार्थं १८१ महिला-सहायता-दूरभाषया सम्पर्कः कर्तुं शक्यते। चिकित्सकीयप्रतिवेदनानि, सन्देशाः, छायाचित्राणि, अन्यानि च प्रमाणानि सुरक्षितानि रक्षणीयानि। परिचयपत्राणि, बैंक-पत्राणि, बालकानां प्रमाणपत्राणि, स्त्रीधनसम्बद्धानि लेखानि च सुरक्षितानि स्थापनीयानि।

विवाहविच्छेदः प्रत्येकस्मिन् प्रसङ्गे प्रथमः उपायः न भवति। विधिसम्मतं संरक्षणं प्राप्य परिस्थितिं सुधारयितुं प्रयत्नः कर्तुं शक्यते। आवश्यकता सति विधिवेत्तृभ्यः परामर्शं प्राप्य पृथक्करणं वा विवाहविच्छेदं वा स्वीकर्तुं शक्यते।

प्यूपिल्स टाइम्स-सन्देशः: हिंसां सहनं कदाचित् विवशता भवेत्, किन्तु तां नियतिः इति स्वीकरणम् आवश्यकं नास्ति। प्रथमं सुरक्षा, ततः निर्णयः प्रत्येकं पदं विधेः विवेकस्य च आधारेण।

विशेष-विश्लेषणम् शासकीय-सामान्य-बीमा-सम्प्रदायः

पूँजी-सहायता केवलं राहतिः वा स्थायिसुधारस्य आवश्यकता?

प्यूपिल्स टाइम्स

भारतस्य शासकीय-सामान्य-बीमा-सम्प्रदायस्य सम्मुखे समस्या केवलं पूँज्यभावस्य नास्ति। लाभप्रदता, जोखिम-प्रबन्धनम्, दावानां व्ययः, प्रशासनिकव्ययः, कार्यदक्षता च अस्य क्षेत्रस्य प्रमुखाः विषयाः सन्ति। नेशनल् इन्श्योरेन्स्, ओरिएण्टल् इन्श्योरेन्स्, यूनाइटेड् इण्डिया इन्श्योरेन्स् इत्यादीनां सार्वजनिकक्षेत्रस्य बीमा-संस्थानानां कृते शासनात् समये समये पूँजीसहायता प्रदत्ता अस्ति। वर्षे २०२० तमे त्रयाणां संस्थानां कृते १२,४५० कोटिरूप्यकाणां पूँजी-प्रावधानम् अनुमोदितम् आसीत्।

किन्तु प्रश्नः अद्यापि अस्ति पुनः पुनः पूँजीसहायता प्रदानेन किं स्थायिसमाधानं भवितुं शक्नोति? वर्षे २०१८ तमे शासनम् एतेषां त्रयाणां संस्थानां एकीकरणस्य प्रस्तावम् अपि अकरोत्। उद्देश्यं संसाधनानां समुचितोपयोगः तथा वित्तीयक्षमतायाः सुदृढीकरणम् आसीत्। अनन्तरं पूँजीसहायतायाः मार्गः प्राधान्येन स्वीकृतः।

प्यूपिल्स टाइम्स-सन्देशः: आवश्यकसमये पूँजीसहायता संजीवनीरूपा भवितुम् अर्हति, किन्तु स्थायिसुधाराय उत्तमं जोखिममूल्याङ्कनम्, सुदृढं जोखिमप्रबन्धनम्, व्ययनियन्त्रणम्, प्रौद्योगिक्याः आधुनिकीकरणम्, उत्तरदायी प्रबन्धनं च आवश्यकम्।

शासकीय-बीमा-व्यवस्थायाः वास्तविकं सुदृढीकरणं केवलं सहाय्येन न, अपितु क्षमतावर्धनेन भविष्यति।

विशेष-विश्लेषणम् वन्दे मातरम् : राष्ट्रगीततः राष्ट्रिय-चेतनापर्यन्तम्

स्वातन्त्र्यसङ्ग्रामस्य प्रेरणातः अद्यतन-राष्ट्रभावनापर्यन्तम्

प्यूपिल्स टाइम्स

भारतस्य राष्ट्रियजीवने केचन शब्दाः केवलं शब्दाः न भवन्ति, अपितु इतिहासस्य, सङ्घर्षस्य, सामूहिकस्मृतेः च प्रतीकाः भवन्ति। 'वन्दे मातरम्' तादृशमेव अमरं राष्ट्रगीतं वर्तते, यत् स्वातन्त्र्यसङ्ग्रामकाले भारतीयानां हृदये स्वातन्त्र्यस्य राष्ट्रभक्तेः च चेतनाम् उद्बोधितवान्।

बङ्किमचन्द्रचट्टोपाध्यायस्य रचना 'वन्दे मातरम्' १८९६ तमे वर्षे भारतीय-राष्ट्रीय-काङ्ग्रेसस्य कलकत्ता-अधिवेशने रवीन्द्रनाथठाकुरेण प्रस्तुतम्। अनन्तरं स्वदेशी-आन्दोलनस्य तथा स्वातन्त्र्यसङ्घर्षस्य अनेकासु अवस्थासु एतत् गीतं राष्ट्रियभावनायाः सशक्तं माध्यमम् अभवत्। कालान्तरे अस्य गीतस्य केषाञ्चित् अंशानां विषये मतभेदाः अपि उत्पन्नाः। १९३७ तमे वर्षे विचार-विमर्शस्य अनन्तरं सार्वजनिकेषु राष्ट्रियकार्यक्रमेषु अस्य प्रथमयोः द्वयोः अन्तरेषु गायनस्य स्वीकृतिः अभवत्। एषः इतिहासः दर्शयति यत् राष्ट्रियप्रतीकानां विषये अपि विविधाः दृष्टयः आसन्।

स्वतन्त्रभारतः 'वन्दे मातरम्' इत्यस्य ऐतिहासिकं योगदानं सम्मानितवान्। २४ जनवरी १९५० तमे दिने संविधानसभायां डॉ. राजेन्द्रप्रसादेन 'जन गण मन' इत्यस्य राष्ट्रगानरूपेण स्वीकृतिः तथा 'वन्दे मातरम्' इत्यस्य राष्ट्रगीतत्वेन समानः सम्मानः प्रदीयते इति घोषितम्।

अद्य 'वन्दे मातरम्' इत्येतत् दलगत-राजनीतेः सीमाभ्यः उपरि स्थित्वा अवलोकनीयम्। एतत् कस्यापि राजनीतिकदलस्य सम्पत्तिः न, अपितु स्वातन्त्र्यसङ्घर्षस्य राष्ट्रियचेतनायाश्च ऐतिहासिकं गौरवम् अस्ति।

प्यूपिल्स टाइम्स-दृष्टिः 'वन्दे मातरम्' केवलं गीतं न, अपितु भारतस्य स्वातन्त्र्यचेतनायाः राष्ट्रियस्मृतेश्च अमरा अभिव्यक्तिः अस्ति।

Dr. Vandana Mishra
M. A. NET (JRF) PHD

जलधारायां लिखिता हृदयकथा

यत्र शब्दाः मौनं भवन्ति, तत्र स्मृतयः कथां वदन्ति

भावभूमिः- डॉ. कुँवर बेचैनस्य गीतस्य पङ्क्तिभ्यः प्रेरिता "दिल पे मुश्किल है बहुत दिल की कहानी लिखना, जैसे बहते हुए पानी पे हो पानी लिखना।"

पात्राणि माधवः-वृद्धः, गम्भीरः, संवेदनशीलश्च।

विभूतिः-तस्य पौत्रः, जिज्ञासुः भावुकश्च।

रेणुः-माधवस्य दिवङ्गता पत्नी।

चिकित्सकः-रेण्वाः चिकित्सकः।

सूत्रधारः-कथासंयोजकः।

प्रथमं दृश्यम्-अर्धरात्रेः रहस्यम् (मञ्चे पुरातनं कक्षम्। दीपः प्रज्वलति। बहिः वर्षायाः ध्वनिः। माधवः नीलवस्त्रे आवृतां दैनन्दिनीं पठति।) माधवः-"रेणु! अद्य अहं त्वां तं सत्यं वक्तुम् इच्छामि, यत् जीवनपर्यन्तं त्वत्तः गोपितवान्..." (द्वारे आघातः। विभूतिः प्रविशति।) विभूतिः-तात! भवान् अद्यापि जागर्ति? माधवः — निद्रा न आगच्छति। विभूतिः-अथवा किमपि लिखति? माधवः-किमपि न। विभूतिः-तर्हि दैनन्दिनीं किमर्थं गोपयसि? (माधवः मौनम्।) विभूतिः-दाद्याः विषये लिखति? माधवः-आम्। मम जीवनस्य कथाम्।

द्वितीयं दृश्यम्-अन्तिमस्मृतिः (चिकित्सालयः। रेणुः शय्यायां शयिता।) रेणुः-माधव! मयि मिथ्या मा वद। माधवः-त्वं शीघ्रं स्वस्थीभविष्यसि। (चिकित्सकः माधवं पृथक नीत्वा वदति।) चिकित्सकः-समयः अतीव अल्पः अस्ति। (माधवः स्तब्धः।) रेणुः-चिकित्सकेन किं कथितम्? माधवः-उक्तं यत् त्वं शीघ्रं स्वस्थीभविष्यसि। (प्रकाशः मन्दीभवति।)

तृतीयं दृश्यम्-सत्यस्य उद्घाटनम् (विभूतिः दैनन्दिनीं पठति।) विभूतिः-"चिकित्सकेन मां सूचितं यत् तव जीवनस्य समयः अल्पः अस्ति..." (माधवः प्रविशति।) विभूतिः-तात! भवान् दाद्यै मिथ्यां उक्तवान्? माधवः-आम्। यतः सा मृत्युं प्रति गच्छन्ती आसीत्। विभूतिः-किन्तु तस्यै सत्यं ज्ञातुं अधिकारः आसीत्। माधवः-त्वं सत्यम् वदसि। किन्तु अहं पतिः आसम्, चिकित्सकः न। कथं तस्याः नेत्रयोः दृष्ट्वा वदामि—"त्वं मृत्युम् उपगमिष्यसि"? (अश्रुपूर्णः।) माधवः-तस्मिन् दिने द्वे मिथ्यावचने उक्ते मया-"त्वं स्वस्थीभविष्यसि" तथा "तव पश्चात् अहं न रोदिष्यामि।" किन्तु द्वितीयं वचनमपि पालयितुं न शक्नोमि। (विभूतिः तस्य हस्तं गृह्णाति।)

चतुर्थं दृश्यम्-प्रेमस्य लेखनम् (नदीतीरम्। जलप्रवाहस्य ध्वनिः।) माधवः-अद्य सत्यं लिखिष्यामि। (दैनन्दिनीं लिखति।) माधवः-"रेणु! त्वया विना अहम् अपूर्णः अस्मि।" (दैनन्दिनीं नदीं प्रति क्षिप्तुम् उद्यतः।) विभूतिः-तात! कथा केवलं तस्यै प्रापयितुं न लिख्यते। सा तेषां कृते लिख्यते, ये अस्माकं पश्चात् आगमिष्यन्ति। माधवः-एतत् त्वया कुतः ज्ञातम्? विभूतिः-भवतः एव शिक्षया।

पञ्चमं दृश्यम्-अन्तिमं पाठनम् (मञ्चे पुस्तकालयः। माधवः दैनन्दिनीं पठति।) माधवः-"प्रिये रेणु! तव हास्यं, तव नेत्रे, तव प्रेम-किमपि शब्दैः पूर्णतया लिखितुं न शक्नोमि। केवलम् एतदेव-त्वम् आसीः, अतः मम जीवनं जीवनम् आसीत्।" (मौनम्।) विभूतिः-तात! दैनन्दिनी पूर्णा अभवत्? माधवः-न। कतिपयाः कथाः कदापि पूर्णाः न भवन्ति। ताः प्रवहन्ति। विभूतिः-हृदयस्य कथा? माधवः-सापि न। सूत्रधारः-प्रेम न पूर्णतया लिखितुं शक्यते। तत् केवलं जीवितुं शक्यते। (प्रकाशः शनैः लुप्यते।)

विशेष-संपादकीयम् शासकीय-विद्यालयाः तथा डिजिटल-निरीक्षणम्

विद्यालयस्य गुणवत्ता चलच्चित्रेण न, अपितु शिक्षायाः परिणामेन उत्तरदायित्वेन च परीक्ष्यते

प्यूपिल्स टाइम्स ब्यूरो

शासकीय-विद्यालयाः समाजस्य महत्त्वपूर्णाः शैक्षिकसंस्थाः सन्ति। तत्र लक्षशः विद्यार्थिनः स्वभविष्यस्य निमार्णं कुर्वन्ति। अतः विद्यालयेषु पारदर्शिता, अनुशासनम्, उत्तरदायित्वं च आवश्यकम्। किन्तु विद्यालय-निरीक्षणस्य अर्थः सामाजिकमाध्यमेषु दृश्यप्रसारणं न भवेत्। अद्य चलदूरभाषस्य माध्यमेन विद्यालयस्य कस्यचित् दोषस्य छायाचित्रं वा चलच्चित्रं वा तत्क्षणं प्रसारयितुं शक्यते। परन्तु शिक्षकस्य अनुपस्थितिः, कक्षायाः अव्यवस्था, मूलभूतसुविधानाम् अभावः वा केवलं दृश्यसमस्या नास्ति। तस्याः पृष्ठतः शिक्षकाणाम् अभावः, संसाधनानां न्यूनता, प्रशासनिकविलम्बः अथवा प्रशिक्षणस्य आवश्यकता अपि भवितुम् अर्हति। अतः सार्थकनिरीक्षणस्य लक्ष्यं दोषप्रदर्शनं न, अपितु कारणान्वेषणं समाधानं च भवेत्।

यदि शिक्षकः स्वकर्तव्ये प्रमादं करोति अथवा विद्यार्थिभिः सह अनुचितं व्यवहारं करोति, तर्हि विधिसम्मतशिकायत्, निष्पक्षपरीक्षणं तथा आवश्यकं कायार्नुष्ठानं भवेत्। परन्तु अनुमतिं विना शिक्षकस्य चलच्चित्रं निर्माय सामाजिकमाध्यमेषु प्रसारणं उचितनिरीक्षणस्य विकल्पः नास्ति।

अभिभावकाः नागरिकाः च समस्याः विद्यालयप्रशासनस्य, शिक्षाधिकारिणां वा विद्यालयप्रबन्धनसमितेः समक्षं स्थापयेयुः।

प्यूपिल्स टाइम्स-दृष्टिः: पारदर्शिता आवश्यकाऽस्ति, मयार्दा च ततोऽपि आवश्यकतरा। चलच्चित्रं समस्यां दर्शयितुं शक्नोति, किन्तु शिक्षाव्यवस्थायाः वास्तविकसुधारः उत्तरदायिना प्रशासनव्यवस्थया, कुशलैः शिक्षकैः, पर्याप्तैः संसाधनैः निरन्तरेण निरीक्षणेन च एव सम्भवति।

Commerce and Industry Minister Piyush Goyal calls India a global data center hub

New Delhi : Commerce and Industry Minister Piyush Goyal has presented India as a highly attractive and robust destination for data centers. He said that India is fully prepared to work with Japanese companies to develop this sector, and that the country has received investment proposals worth two hundred billion US dollars from major global investors. At a meeting with Japan's Minister of Economy, Trade and Industry Akazawa Ryosei in Tokyo, Mr. Goyal said that the India-Japan partnership could be centered around four main pillars- increasing trade, strengthening technological cooperation, boosting investment and promoting tourism. Earlier, in Tokyo, while addressing Japanese companies in the semiconductor and A.I. sectors, the Union Minister announced a major reform. He said that the government is working on a special framework under which high-tech companies setting up manufacturing units in India could be exempted from mandatory Bureau of Indian Standards certification for the necessary equipment and components. He said that semiconductor demand in the country is expected to reach 150 billion US dollars by 2032.Mr. Goyal also discussed increasing long-term investments with officials of Japan's leading financial institutions. He said that despite global uncertainties, India recorded a growth rate of 7.7 percent last year and the country is rapidly moving towards becoming a 30 trillion dollar economy by 2047.

Home Minister Amit Shah directs agencies to take strict measures to prevent infiltration

New Delhi: Union Home Minister Amit Shah has directed all agencies to take strict measures to prevent infiltration. Inaugurating the ninth National Security Strategy Conference-2026 in New Delhi, Home Minister Amit Shah directed that AI-based analysis of information available on the Multi-Agency Centre- MAC platforms should be carried out to prepare standard operating procedures (SOPs) to deal with various national security challenges. To effectively tackle terrorism and extremism, Shah emphasized training for the implementation of the Home Ministry's Prahar scheme, expediting trials by bringing back fugitives and using provisions for trials in absentia, and adopting a comprehensive and integrated approach while investigating Unlawful Activities (Prevention) Act – UAPA cases. On the first day of the conference, important aspects of national security were discussed. These included addressing counter-terrorism challenges, the integration, analysis and operation of intelligence through a multi-agency centre, a strategic document for controlling narcotics, detecting and deporting illegal immigrants, a policy framework for tackling cybercrime, and discussions regarding Pakistan's proxy war. Before the inauguration, Shah paid floral tribute at the Martyrs' Pillar and paid homage to the brave personnel of the Intelligence Bureau who made the supreme sacrifice while performing their duty to protect national security and integrity. The two-day conference is being held in a hybrid format. More than 850 participants from across the country are taking part in it. The conference held in Delhi was attended by the Minister of State for Home Affairs, the Union Home Secretary, the Deputy National Security Adviser, the heads of the Central Armed Police Forces and the heads of Central Police Organisations. Directors General of Police from the states and Union Territories, young police officers working at the cutting edge, and experts in specialised fields joined the conference virtually. On the second day of the conference, the focus will be on preparing countermeasures against threats posed by aerial systems, securing the maritime economy, information warfare and its impacts on national security, and the need for a biosecurity framework. In accordance with Prime Minister Narendra Modi's directives, the aim is to seek solutions to key challenges related to national security through the extensive experience of leading officers working at the grassroots level and the collaboration of experts in the relevant fields. This conference has been held annually in a hybrid format since 2021.

Education Minister Pralhad Joshi held a meeting with UGC and AICTE officials

New Delhi: Union Education Minister Pralhad Joshi discussed emerging priorities and strategies for strengthening higher education institutions with officials of the University Grants Commission (UGC) and the All India Council for Technical Education (AICTE) during a virtual meeting. Pralhad Joshi said that the discussion also included the Khelo India campaign, which emphasized promoting sports in educational institutions, encouraging broad participation among students, and nurturing sporting talent among the youth.

Strictness on four medicines

Use without a doctor's advice will be restricted

New Delhi: The central government has proposed including flupentixol, zopiclone, gabapentin and carisoprodol in Schedule H1 of the drug regulations. In the coming days, these medicines will not be available without a prescription. Not only that, the rules regarding the sale and record-keeping of these medicines will become stricter than before.

The Ministry of Health has prepared a proposal for this. After the proposal is approved, it will not be easy to purchase these medicines. However, these medicines will be available on a doctor's prescription. On the other hand, drugstore owners will also have to maintain a complete record of their sale. This will have to include information about the patient, doctor and medicine dispensed. The real target is to increase monitoring of buying medicines without advice and their misuse.

What is in the Health Ministry's proposal?

Which medicine is used for what?

Flupentixol: used to treat mental illnesses, especially schizophrenia and long-standing mental health problems.

Zopiclone: a medicine given for a short period for severe problems with insomnia.

Gabapentin: besides treating epilepsy, it is also used for nerve pain.

Carisoprodol: a medicine used for a short period for muscle strain and pain.

Had started being used for intoxication

The Drug Consultative Committee of the Central Drugs Standard Control Organisation had approved the expert committee's recommendation to include these four drugs in H1.

Concerns related to the misuse and use of these drugs for intoxication had been raised before the committee. All four affect the central nervous system. Therefore, their misuse or use without supervision can cause harm. In many places, they had also started being used for intoxication.

Strict action on these...

Flupentixol, zopiclone, gabapentin and carisoprodol are used for sleep, nerve pain and mental illness.

Government removes export restrictions on wheat flour and related products

New Delhi: The government has removed export restrictions on wheat flour and related products, opening the way for overseas exports of flour, refined flour, semolina and other wheat-based products. According to a notification issued by the Directorate General of Foreign Trade, the government has amended the export policy for wheat flour and related products with immediate effect. In the notification issued by the Directorate General, the government has declared the export of certain specific categories of wheat and durum wheat free from restrictions.

The government has set the goal of achieving a 'Developed India' by 2047

Reiterated the commitment to equip the country's youth with skills

New Delhi: The government has reiterated its commitment to making the country's youth skilled and preparing them for future needs in order to achieve the goal of 'Viksit Bharat' by 2047. In this direction, NITI Aayog has released an important report titled Reimagining Skilling for Viksit Bharat@2047, which presents a blueprint for the country's new skill training framework. Meanwhile, NITI Aayog has clarified the situation regarding the figures in the report, saying that in some areas, the number of 87 million 'NEET' youth has been incorrectly interpreted as unemployment. The Commission clarified that the 'NEET' category includes young people who are currently not seeking employment, so it cannot be linked to the unemployment rate or the number of unemployed people. NITI Aayog has placed special emphasis on the fact that the data used in the report are based on the 78th round of the National Sample Survey. These data were collected during the COVID-19 pandemic. The government is continuously taking major steps to equip young people with skills in new-age technologies.

The indigenous AK-203 'Sher' is ready to join the army

The capability of small arms will be strengthened

New Delhi: India's indigenous AK-203 assault rifle, manufactured in Korwa in Uttar Pradesh's Amethi district, will soon be handed over to the Indian Army. This is an important step towards the country's self-reliance in defence production. The rifle, being manufactured by Indo-Russian Rifles Private Limited (IRRPL), has been named "Sher". It is expected to strengthen the Army's small arms capability. IRRPL Managing Director and CEO Major General Sudheesh Kumar Sharma said that the production of the AK-203 in Amethi is a matter of pride. The company is working to ensure its timely delivery to the Army. He

said that it is a matter of great pride that this indigenous rifle is being manufactured in Munshiganj, Amethi. The production of the AK-203 'Sher' is being carried out keeping national security and the interests of the country in mind. According to Sharma, the decision to manufacture the AK-203 rifle in India was taken around 2019 by the Indian Army and the Ministry of Defence. Under this, the technology to manufacture the rifle was to be obtained from Russia, after which an agreement was to be signed for domestic production. He said that the Ministry of Defence has placed its trust in IRRPL to provide the rifles within the stipulated deadline. He said that the company has prepared its production schedule in such a way that it will be able to complete the supply under the contract even before the stipulated deadline. The Korwa facility is operated by IRRPL, a joint venture between Indian defence public sector undertaking and Russian companies 'Concern Kalashnikov' and 'Rosoboronexport'. The venture was established to manufacture more than six lakh AK-203 assault rifles in India.

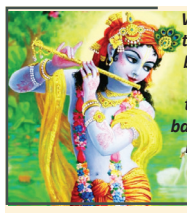

When someone takes two steps back from you, it is better to take four steps back after wishing him happiness throughout his life.

PUPILS TIMES

What is yours will remain with you, even if the entire universe unites to snatch it.
Geeta Sermon

Friday, 28 August to 3 September 2026

Yogi government changed the law

Parents will be able to disinherit children who do not take care of them from their property

Lucknow: The Yogi cabinet has taken a major decision against children in Uttar Pradesh who turn their backs on their parents in their old age and do not take care of them. The cabinet has decided to amend the Uttar Pradesh Maintenance and Welfare of Parents and Senior Citizens Act, giving parents the right to disinherit such children. Under the senior citizens policy, parents have been given the right to evict their children. The process for eviction has also been laid down. The government will also issue a toll-free number so that if senior citizens are unable to go themselves, they can contact this number and voice their concerns. The District Magistrate will submit a report every month. The hearing will take place within 30 days. After

the Yogi cabinet meeting, Finance Minister Suresh Khanna, while providing information about this, said that the cabinet has decided to amend the 'Uttar Pradesh Maintenance and Welfare of Parents and Senior Citizens Rules-2014' by adding 22 A, 22 B and 22 C to Rule 22. Using these provisions added to the Act, parents will be able to disinherit their children from their property. The government has also laid down the process for eviction. It has been stated that if the children or other dependent relatives of a senior citizen are not providing for their maintenance or are not treating them well, or are abusing them, the aggrieved senior citizen will be able to evict them from their property.

Government to soon issue a toll-free number

The Yogi cabinet has also made arrangements to ensure that elderly people can easily benefit from this system. The government has made the eviction process clear and time-bound. Along with this, the government will soon issue a toll-free number. This number will make it easier for senior citizens who are unable to go and file their complaints themselves. They will be able to call the toll-free number and voice their concerns. As soon as a complaint is received, they will be provided with the necessary assistance immediately.

Complaints can be made to the DM

According to the new provisions of the Act, elderly victims will be able to file complaints in such cases with the District Magistrate (DM). The DM will have to submit a monthly report of all such cases to the government. Complaints will be heard within 30 days. The aim is to ensure that elderly people do not have to wait for a long time to raise their voice against the injustice they are facing and to get justice. The Yogi government has previously also made several provisions regarding the care of the elderly. Now, the purpose of this change made in the Act by the Yogi Cabinet is to ensure senior citizens' right to live a dignified life and protect their rights. Experts say that this will certainly lead to a reduction in the atrocities and mistreatment faced by them.

India and Morocco set a target to double bilateral trade by 2030

New Delhi: India and Morocco have set a target to double bilateral trade by 2030, increase investment and promote industrial cooperation. The Ministry of External Affairs said this is an important step towards making the India-Morocco partnership even stronger and more dynamic. The seventh India-Morocco Joint Commission meeting was co-chaired by Minister of State for Commerce and Industry Jitin Prasada and Morocco's Secretary of State in charge of Foreign Trade at the Ministry of Industry and Trade, Omar Hejira.

UPI completes ten years, becomes a major digital payment medium in 11 countries

New Delhi: The Unified Payments Interface, or UPI, which has transformed the landscape of digital payments in the country and abroad, has completed ten years of success today. Launched on this day in 2016, UPI is now operational in eleven countries and has emerged as the most successful pillar of India's digital public infrastructure. According to the Ministry of Finance, the number of transactions carried out through UPI has increased by a massive nearly 13,000 times over the past decade. While only one crore 78 lakh transactions were conducted annually in 2016-17, this figure rose to more than 24 thousand one hundred 62 crore in 2025-26. During the same period, the value of transactions also increased from seven thousand crore rupees to approximately 314 lakh crore rupees. Prime Minister Narendra Modi, praising this remarkable journey of UPI, described it as a major milestone in the country's digital journey. He called on citizens to share their UPI experiences on social media and said that every Indian should be proud of its unprecedented reach. UPI has not only reduced the digital divide, but has also connected even the person standing at the farthest end of the country to the mainstream economy.

Dr. Arvind singh Rana
MBBS, DNB (General Surgery)
General & Laparoscopic Surgeon Coloproctologist
FACRSI, FAMS FIAGES

A New Path to Motherhood

The Remarkable Promise of Uterus Transplantation

For many women, the dream of motherhood is deeply personal and profound. But what if a woman is born without a functioning uterus or loses it because of a medical condition? Does that mean the possibility of carrying a pregnancy is lost forever? Modern medicine is offering a remarkable new possibility: Uterus Transplantation.

Uterus transplantation is a highly specialized surgical procedure in which a healthy uterus from a carefully selected donor is transplanted into a woman who does not have a functioning uterus. Unlike many other organ transplants, its purpose is not simply to replace a failed organ, but, in carefully selected patients, to create the possibility of pregnancy and childbirth.

This approach may be particularly relevant for women with congenital conditions such as Mayer-Rokitansky-Küster-Hauser (MRKH) syndrome, in which the uterus may be absent or severely underdeveloped. It may also offer an option for selected women who have lost their uterus because of cancer treatment or other serious medical conditions.

However, uterus transplantation is far from a routine procedure. Connecting delicate blood vessels, establishing adequate blood flow, preventing rejection, and maintaining the health of the transplanted uterus require exceptional surgical precision and close medical monitoring. Recipients may also need immunosuppressive medicines to reduce the risk of rejection.

The significance of this procedure extends beyond the operating room. For carefully selected women who previously had very limited options for carrying a pregnancy, it may offer something deeply meaningful: a renewed possibility of experiencing pregnancy and motherhood.

Uterus transplantation remains a highly specialized and evolving field. It requires rigorous patient selection, advanced surgical expertise, a multidisciplinary team, and long-term medical supervision. It is not appropriate for every woman, and the potential benefits must always be carefully weighed against the risks.

This procedure should only be considered after detailed counseling and careful evaluation by a multidisciplinary team of gynecologists, transplant surgeons, fertility specialists, and other relevant experts.

Modern surgery is not only about treating disease it is also about opening doors that once seemed permanently closed. Uterus transplantation represents one of medicine's most remarkable efforts to turn a once-unimaginable possibility into a new path toward hope and motherhood.

PUPILS TIMES
Core Committee

Shivprakash Pandey	Chief Publisher
Vikas Maurya	Co Publisher

Address : Shop No.3, Khatri NX Aprt., Valivali, Badlapur (West) - 421503.
Web : pupilstimes.com

LIC
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA
"With you in life, and after life"

POPULAR LIC PLANS:
- Jeevan Labh — Limited Premium, High Returns
- New Children's Money Back — Secure Your Child's Future
- Jeevan Umang — Whole Life Cover + Pension Benefits
- Bima Jyoti — Guaranteed Additions, Safe Growth
- Also Available – Complete Financial Planning Guidance

KEY BENEFITS:
- Life Insurance + Savings Plan
- Child Education and Marriage Planning
- Retirement Planning
- Tax Benefits Available

भारतीय जीवन बीमा निगम
"ज़िंदगी के साथ भी, ज़िंदगी के बाद भी"
FREE POLICY CONSULTATION

LIC Agent
Archana Shukla
+91 91129 39085
+91 74998 67628
Shop No. 2, Near Vithal Mandir, New Vadavali Chowk, Badlapur (West) – 421503
LIC Agent ID: 04497939

ANURAG SHUKLA CHIEF EDITOR . Mob.: +91 9167378057, E-mail: anurag@pupilstimes.com. www.pupilstimes.com

Printes, Published & Owned by : **ANIL MISRA,** Printed at **SOMANI PRINTING PRESS,** UNIT NO. 04, GROUND FLOOR, N. K. INDUSTRIAL ESTATE, OFF. AAREY ROAD, GOREGAON (E.), MUMBAI, MAHARASHTRA - 400064. **Published at :** 94, 1/3 JAI JAWAN VASAHAT, SHIVSHRUSHTI ROAD, KURLA (EAST), MUMBAI - 400024 (MAHARASHTRA). (The editor does not necessarily agree with the news, artical and advertisements published in this issue. Any disputes are subject to the jurisdiction of the Mumbai court) Editor - **ANIL MISRA** , Mob. : 92208 68564, **Email :** anilmisrapc@gmail.com. **PRGI. No. : MHMUL/25/A2419**